

हिंदी व्याकरण कक्षा ७

VIBGYOR
HIGH™



गृह संदर्भ पुस्तिका सत्र १

अभिभावकों के लिए सूचना :

गृह संदर्भ पुस्तिका मुख्य परीक्षा बोर्ड के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है। यह पुस्तिका विद्यार्थियों की रुचि और स्तर के अनुकूल उन्हें प्रतिदिन के जीवन से जोड़ती है। भाषा ज्ञान को सरल तथा रुचिकर बनाना भी अत्यंत आवश्यक है।



यह पुस्तिका इसी दिशा में पहला कदम है। पुस्तिका पाठ्यपुस्तक तथा अभ्यासपुस्तिका का मिला—जुला रूप है या अपने—आप में बस्ते का बोझ कम करने का अनूठा प्रयास है। इकाई के सभी पाठों को समेटते हुए आकर्षक पृष्ठ तथा मोहक चित्र दिए गए हैं। इसका उद्देश्य स्तर के अनुरूप कविता, कहानी, पत्र आदि से परिचय कराना तथा विषयवस्तु में नयापन लाना है।

आपसे हमारा अनुरोध है कि जहाँ तक संभव हो विद्यार्थियों को पढ़ाने अथवा सिखाने के बदले स्वयं पढ़ने और सीखने के लिए अनुप्रेरित करें तथा इस पुस्तिका का उपयोग कक्षा में विषयवस्तु पढ़ाने के बाद ही करें। यह पुस्तिका विद्यार्थियों को रटने की प्रक्रिया से दूर रखकर विषयवस्तु को वास्तविक रूप में समझने में मदद करेगी। इस पुस्तिका में कम—से—कम पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग कर इसे अधिक—से—अधिक व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया गया है।

हमारा पूरा प्रयास है कि इस संदर्भ पुस्तिका को हम आपके सहयोग से विद्यार्थियों के लिए मजबूत माध्यम बना सकें।

विषय-वस्तु

इकाई १	—	क्रिया एवं काल	१ — २०
इकाई २	—	वाक्यांश के लिए एक शब्द	२१ — २४
इकाई ३	—	पर्यायवाची शब्द	२५ — २७
इकाई ४	—	कारक	२८ — ३६
इकाई ५	—	अपठित गद्यांश	३७ — ४३
इकाई ६	—	पत्र लेखन (अनौपचारिक पत्र)	४४ — ५४
इकाई ७	—	निबंध लेखन	५५ — ६७
इकाई ८	—	चित्र कथा लेखन	६८ — ७३
इकाई ९	—	विज्ञापन लेखन	७४ — ७८

इकाई १: क्रिया एवं काल

पाठ के उद्देश्य :—

- ↳ क्रिया शब्द के अर्थ से परिचित होंगे।
- ↳ लिंग, वचन तथा कारक बदलने पर क्रिया के रूप में परिवर्तन की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- ↳ क्रिया के प्रकार के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- ↳ सकर्मक व अकर्मक क्रिया में अंतर समझेंगे।
- ↳ प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेदों से परिचित होंगे।
- ↳ अर्थ के आधार पर क्रिया के भेदों से परिचित होंगे।
- ↳ क्रिया के काल से परिचित होंगे।
- ↳ काल के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- ↳ भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्यत काल में अंतर समझेंगे।

भाषा में हर एक वाक्य किसी कार्य के किए जाने अथवा होने का बोध कराता है। सामान्यतः यह बोध कराने वाला शब्द ‘क्रिया’ कहलाता है। क्रिया वाक्य का अत्यंत महत्वपूर्ण घटक होती है। क्रिया के बिना कोई भी वाक्य पूरा नहीं होता। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखिए —

उदाहरण :

१. पार्क में बच्चे **झूल रहे हैं।**
२. जाफ़र अभी रेडियो **सुन रहा है।**
३. माली पौधा **लगाता है।**



उपर्युक्त वाक्यों में द्वूल रहे हैं, सुन रहा है, लगाता है आदि में कार्य के होने का बोध हो रहा है। क्रिया प्रत्येक वाक्य में अनिवार्य रूप से रहती है। कभी—कभी प्रत्यक्ष रूप से वाक्य में क्रिया नहीं भी होती। परंतु बिना क्रिया के वाक्य अपूर्ण—सा लगते हैं।

अर्थात् हम रोज सुबह से शाम तक अनेक कार्य करते हैं। यही कार्य क्रिया कहलाते हैं।



परिभाषा :- वाक्य में किसी काम के करने या होने की सूचना देनेवाले शब्दों को 'क्रिया' कहते हैं।

क्रिया के मूल रूप को 'धातु' (root) कहते हैं, जैसे — आ, खा, पढ़, कर आदि। इन धातुओं के आगे 'ना' प्रत्यय (Suffix) जोड़ देने से क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है।

जैसे — (१) खा + ना = खाना

(२) पढ़ + ना = पढ़ना

क्रिया से ही वाक्य का अर्थ पूर्ण एवं स्पष्ट होता है। हिंदी में सामान्यतः क्रिया वाक्य के अंत में आती है।

उदाहरण —



मैंने पुस्तक पढ़ी।

(पढ़ना)



बच्ची दौड़ रही है।

(दौड़ना)



समीर सोता है।

(सोना)

इसमें पढ़ना, दौड़ना, सोना क्रियाएँ हैं।

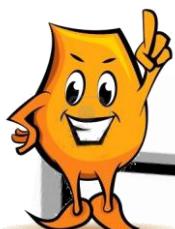
❖ लिंग, वचन तथा कारक में परिवर्तन होने पर क्रिया का रूप भी बदल जाता है।

लिंग बदलने पर	वचन बदलने पर	कारक बदलने पर
सुमित पढ़ रहा है।	बच्चा दूध पी रहा है।	राधा ने फल खाया।
नेहा पढ़ रही है।	बच्चे दूध पी रहे हैं।	राम से फल खाए गए।

❖ क्रिया मुख्यतः कर्ता और कर्म पर निर्भर होती है। इसलिए इनका ज्ञान अधिक विस्तृत रूप से लेना आवश्यक है। उदाहरण —



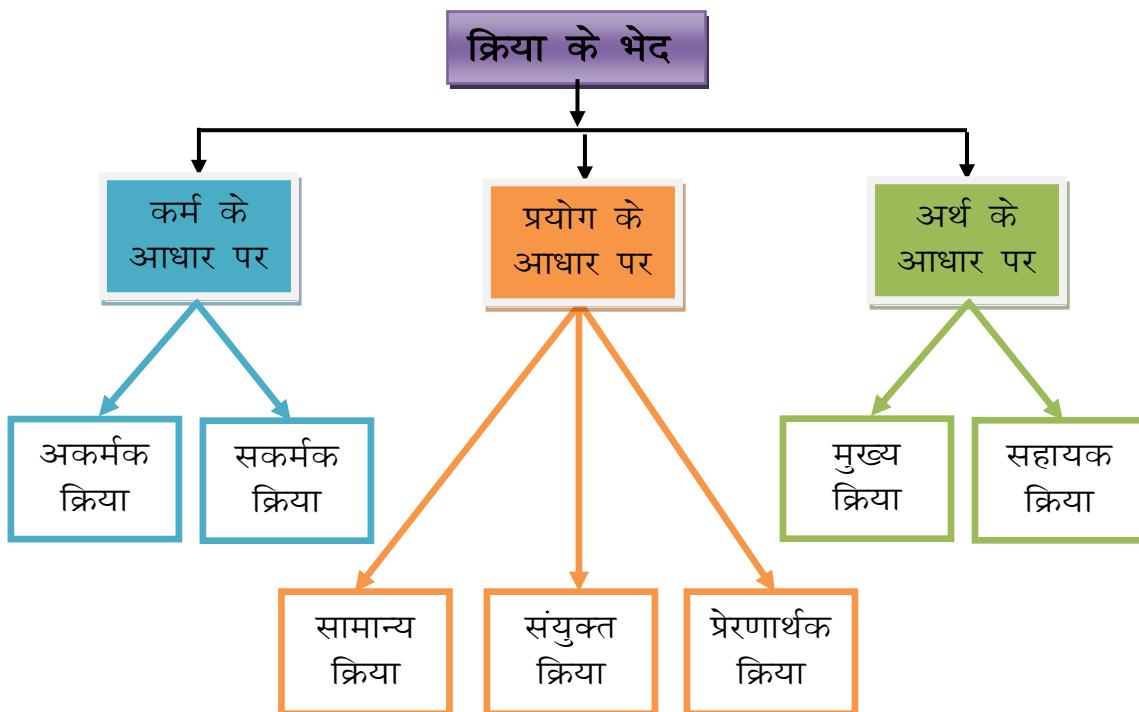
मीत पुस्तक पढ़ रहा है।	बंदर आम तोड़ रहा है।	जय ने बहन को पढ़ाया।
कर्ता कर्म क्रिया	कर्ता कर्म क्रिया	कर्ता कर्म क्रिया



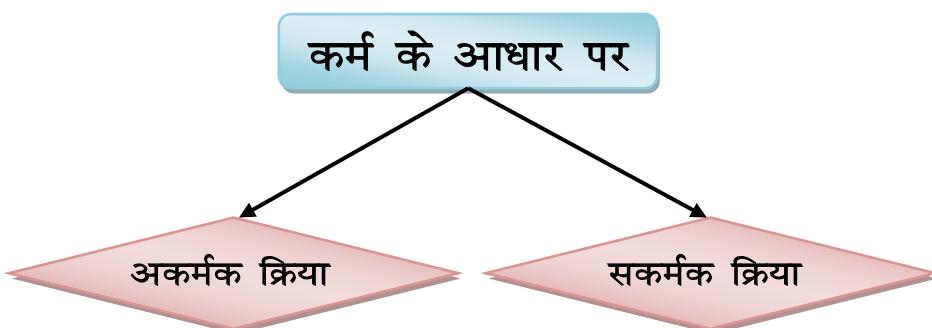
ध्यान दीजिए :-

- क्रिया के बिना कोई वाक्य पूरा नहीं होता।
- क्रिया शब्दों की पहचान अंत में लगे 'ना' से की जा सकती है।
- लिंग, वचन तथा कारक से क्रिया बदलती है।
- क्रिया कर्ता और कर्म पर निर्भर होती है।

- वाक्य में क्रिया के साथ क्या या किसे प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलता है, उसे कर्म (Object) कहते हैं।
- वाक्य में जिसके द्वारा क्रिया होती है या जो क्रिया करने का कार्य करता है, उसे कर्ता (Subject) कहते हैं।



१. कर्म के आधार पर



(क) अकर्मक क्रिया (Intransitive verb) :-

अकर्मक का अर्थ है — ‘कर्म के बिना’। जिन वाक्यों में कर्म नहीं होता और क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर ही पड़ता है, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

उदाहरण :

१. बच्चे दिनभर **खेलते हैं।**
२. बालक **हँसता है।**
३. सूरज **झूब चुका था।**
४. हाथी **नहाता है।**
५. चिड़ियाँ **उड़ रही हैं।**



इन वाक्यों में क्या या किसे प्रश्न करने पर कोई उत्तर नहीं आता है, इसलिए यह ‘अकर्मक क्रिया’ है।

**परिभाषा :-**

वाक्य में जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें ‘अकर्मक क्रिया’ कहते हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया (Transitive Verb) :-

सकर्मक का अर्थ है – ‘कर्म के सहित’। जिन वाक्यों में कर्म होता है और क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है, वे सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

उदाहरण :

१. मनीष **पौधा लगाता है।**
२. सीता **अंगूर खा रही है।**
३. छात्र **पुस्तक पढ़ रहा है।**
४. शिखा **रोटी खाती है।**
५. सीता **पत्र लिख रही है।**



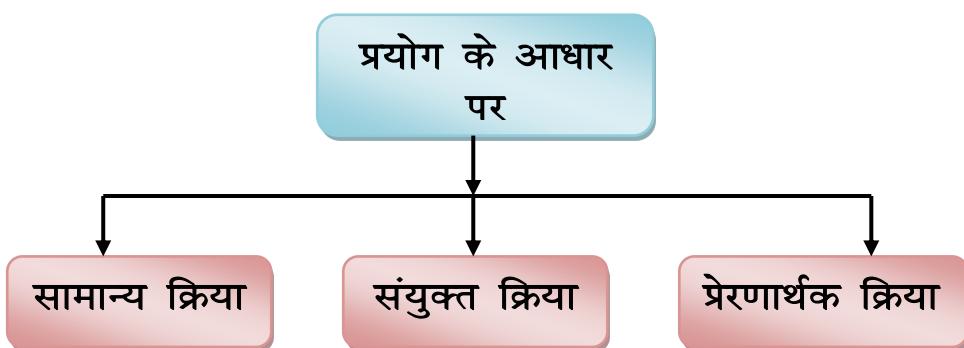
प्रस्तुत वाक्यों में पौधा, अंगूर, पुस्तक, रोटी, पत्र ये सभी शब्द कर्म हैं, और जो क्रिया कर्म सहित होती है उसे ‘सकर्मक क्रिया’ कहते हैं।



परिभाषा :—

जिन क्रिया शब्दों को कर्म की अपेक्षा होती है, उन्हें ‘सकर्मक क्रिया’ कहते हैं।

२. प्रयोग के आधार पर



(क) सामान्य क्रिया :— जिस वाक्य में केवल एक ही क्रिया का प्रयोग हो, वह सामान्य क्रिया कहलाती है।

उदाहरण :

- १. पानी **बरसा**।
- २. घोड़ा **दौड़ा**।
- ३. नीरज ने पत्र **लिखा**।
- ४. नौकर बाज़ार **गया**।
- ५. माँ ने सब्ज़ी **खरीदी**।




उपर्युक्त वाक्यों में बरसा, दौड़ा, गया, लिखा, खरीदी आदि शब्दों से वाक्यों में केवल एक ही क्रिया होने का बोध होता है, इसलिए ये सब सामान्य क्रियाएँ हैं।

(ख) संयुक्त क्रिया :— दो या दो से अधिक धातुओं से बनी क्रिया को संयुक्त क्रिया कहते हैं। इनमें पहली क्रिया मुख्य अर्थ देती है और दूसरी क्रिया उसके अर्थ को विशेष छवि देती है।

उदाहरण :



१. वह दुख से रो पड़ा।
२. मैं चलते—चलते थक गया।
३. सुशांत रातभर पढ़ता रहा।
४. पिता जी घंटों सोचते रहे।
५. सभी इधर—उधर दौड़ने लगे।



उपर्युक्त वाक्यों में रोना, थकना, पढ़ना, सोचना तथा दौड़ना ये हमें वाक्य के मुख्य कार्य का बोध दिलाती हैं तथा पड़ा, गया, रहा, रहे, लगे आदि सब मुख्य क्रियाओं की छवि हैं।

ग) प्रेरणार्थक क्रिया :— जिस वाक्य का कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। प्रेरित कर्ता मुख्य कर्ता होता है।

उदाहरण :



१. किसान ने बेटे से पत्र लिखवाया।
२. मैंने अपनी दादी को गाँव से बुलवाया।
३. अध्यापिका छात्र से पुस्तक पढ़वा रही है।
४. संतोष ने चित्रकार से चित्र बनवाया।
५. माँ जी ने दादा जी को रामायण सुनवायी।



उपर्युक्त पहले वाक्य में 'पत्र लिखने' का काम 'किसान' नहीं करता, वह अपने बेटे को प्रेरित करता है और प्रेरित कर्ता 'बेटा' पत्र लिखता है। चौथे वाक्य में संतोष 'चित्रकार' को चित्र बनाने के लिए प्रेरित करता है। उसी प्रकार दूसरे, तीसरे और पाँचवें वाक्यों में प्रेरित कर्ता क्रमशः 'दादी जी' 'छात्र' और 'दादा जी' हैं।

३. अर्थ के आधार पर



(क) **मुख्य क्रिया (Main Verb)** :— वाक्य में जो कार्य हो रहा होता है, वह मुख्य क्रिया होती है।

उदाहरण :

- १. सीता **गाती** है।
- २. बच्चा **खेल** रहा है।
- ३. राम ने पुस्तक **पढ़ी**।
- ४. शैलेश पतंग **उड़ा** रहा था।
- ५. राधा **जाग** गई।

उपर्युक्त वाक्यों में गाती, खेल, पढ़ी, उड़ा, जाग आदि शब्द हमें किसी मुख्य कार्य के होने का बोध दिलाते हैं।

(ख) **सहायक क्रिया (Helping Verb)** :— जो क्रिया वाक्य पूरा करने के लिए मुख्य क्रिया की सहायता करती है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं।

वाक्य में मुख्य क्रिया के बाद ही सहायक क्रिया आती है।

उदाहरण :



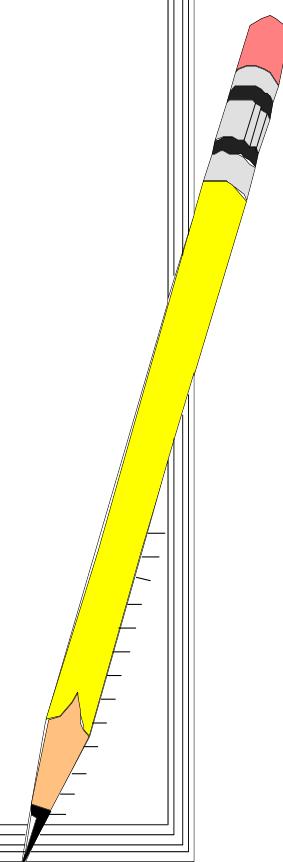
१. वह ज़ोर से हँस पड़ा।
२. सुधीर ठहर गया है।
३. मानसी फल खा रही है।
४. मैं उसे कुछ दे न सका।
५. वे गलती कर बैठे।



उपर्युक्त वाक्यों में पड़ा, गया है, रही है, सका, बैठे आदि शब्द मुख्य क्रिया की सहायता कर रहे हैं अतः ये सहायक क्रिया कहलाएँगी।

हमने सीखा :—

- वाक्य में किसी काम के करने या होने की सूचना देनेवाले पद को 'क्रिया' कहते हैं।
- क्रिया में लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार विकार आते हैं।
- कर्म की दृष्टि से क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं — अकर्मक और सकर्मक।
- प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के भेद हैं— सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया और प्रेरणार्थक क्रिया।
- अर्थ के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं— मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया।



* * * * *

क्रिया के काल (Tense)

काल का अर्थ है – ‘समय’। काल के अंतर्गत हम किसी क्रिया के समय का अध्ययन करते हैं। इसी से ज्ञात होता है कि किसी कार्य की क्या स्थिति है? समय तो निरंतर चलता रहता है। इस प्रवाह में जब क्रिया घटती है तो वह उसका वर्तमान, इसके पूर्व जो कुछ घटा भूत और इसके बाद जो घटने वाला होगा भविष्यत कहलाता है।

उदाहरण के लिए कुछ सचित्र वाक्य देखिए –



- १) सुबह मैंने पत्र—पेटिका (पोस्ट बॉक्स) में पत्र डाला था।
- २) अब डाकिया इसे थैले में डालकर ले जा रहा है।
- ३) कल यह पत्र मेरे मित्र को मिलेगा।

दिए गए वाक्यों में तीन अलग—अलग स्थितियाँ हैं। पहले वाक्य से ज्ञात होता है कि पत्र, पत्र—पेटिका में डाला गया था, उसे डाले कुछ समय बीत गया है। दूसरे वाक्य से ज्ञात होता है कि डाकिया पत्र—पेटिका से पत्र निकाल रहा है। तीसरे वाक्य में स्थिति आने वाले समय की है जब वह पत्र मित्र को मिल जाएगा। यह तीनों वाक्य अलग—अलग काल के हैं।

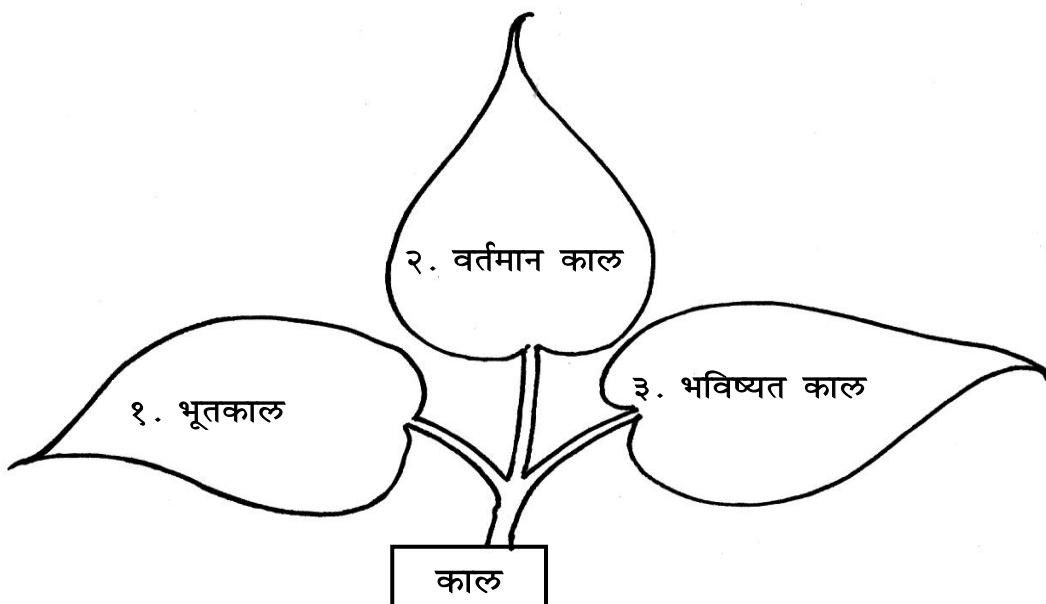


परिभाषा :—

क्रिया के जिस रूप से कार्य के किए जाने अथवा होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

- काल के तीन मुख्य भेद हैं —

काल के भेद



१. भूतकाल (Past Tense): भूत का अर्थ है बीता हुआ। क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य बीते हुए समय में हुआ था, उसे भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण :

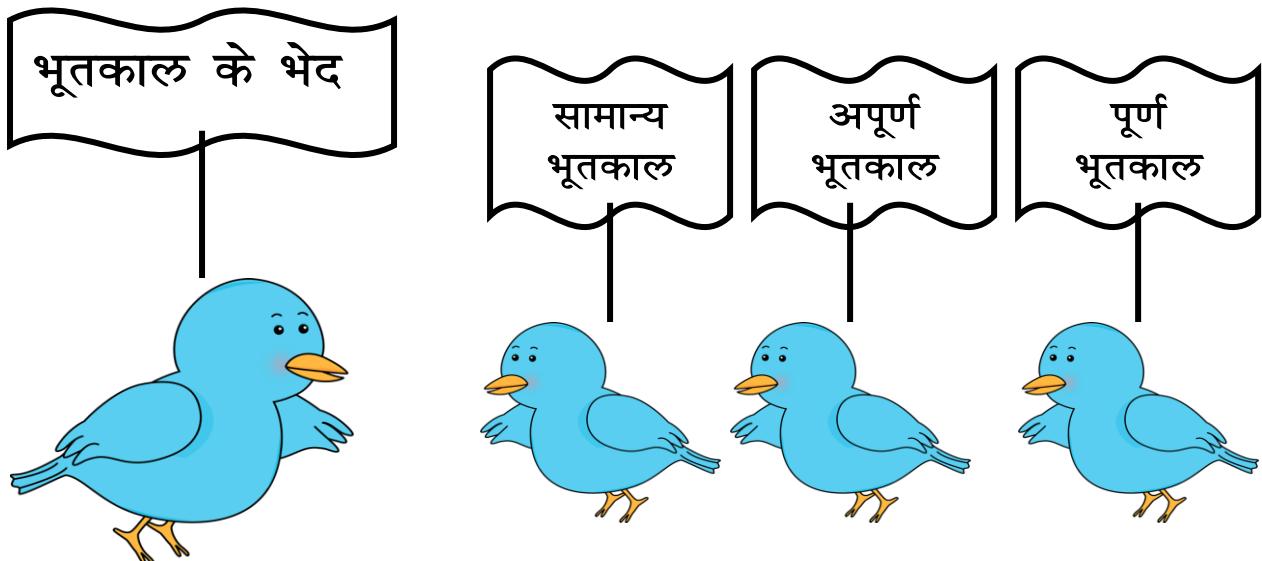
1. मैंने समाचार **सुने**।

2. माँ बाज़ार जा **रही थी**।

3. मेरे भाई ने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त **किया था**।

उपर्युक्त वाक्यों में ‘सुने’, ‘रही थी’, ‘किया था’ क्रिया—रूपों से ज्ञात होता है कि कार्य बीते हुए समय में घटीत हो चुका है, अतः यहाँ भूतकाल है।

भूतकाल के भेद—



(क) **सामान्य भूतकाल (Past Indefinite)** : जहाँ क्रिया के रूप से यह ज्ञात हो कि बीते समय में कार्य साधारण ढंग से हुआ है, पूर्ण अथवा अपूर्ण होने की स्थिति या किसी शर्त आदि का संकेत न मिले, वहाँ सामान्य भूतकाल माना जाता है।



ध्यान दीजिए :-

सामान्य भूतकाल में क्रिया हमेशा भूतकाल में ही होती है। उसके साथ वर्तमान (है, हैं, हूँ) और भूतकाल (था, थी, थे) का कोग रूप नहीं लगता।

उदाहरण :

१. माता जी ने खाना **पकाया**।
२. वे समझ **गए**।
३. कुली ने सामान **उठाया**।
४. शिक्षक ने पाठ **पढ़ाया**।
५. मैंने परीक्षा **दी**।



(ख) **अपूर्ण भूतकाल** (Past Continuous) : क्रिया के जिस रूप से उसके बीत चुके समय में आरंभ होकर अभी पूरा न होने का पता चलता है, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।



ध्यान दीजिए :-

अपूर्ण भूतकाल में मूल धातु के साथ (पढ़, कर, चल आदि) 'रहा था', 'रही थी', 'रहे थे', 'रही थीं' आदि लगते हैं।

उदाहरण :

१. वर्षा **हो रही थी**।
२. लड़कियाँ गीत **गा रही थीं**।
३. बादशाह और बीरबल बातें **कर रहे थे**।
४. रात देर तक कुत्ता **भौंक रहा था**।
५. तारे **निकल रहे थे**।



(ग) पूर्ण भूतकाल (Past Perfect) : जिस क्रिया रूप से काम को पूर्ण हुए काफी समय बीत जाने का बोध होता है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।



ध्यान दीजिए :-

इसमें सामान्य भूतकाल की क्रिया के साथ अंत में 'था', 'थी', 'थे' आदि लग जाते हैं।



उदाहरण :

१. बगीचे में सुंदर फूल **खिले** थे।
२. हम सब पिकनिक **गए** थे।
३. जय खेल **चुका** था।
४. मेज़ पर गेंद **रखी** थी।
५. गाड़ी चली **गई** थी।



२. वर्तमान काल (Present Tense) : क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य प्रस्तुत (जो अभी जारी है।) समय में हो रहा है, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं।

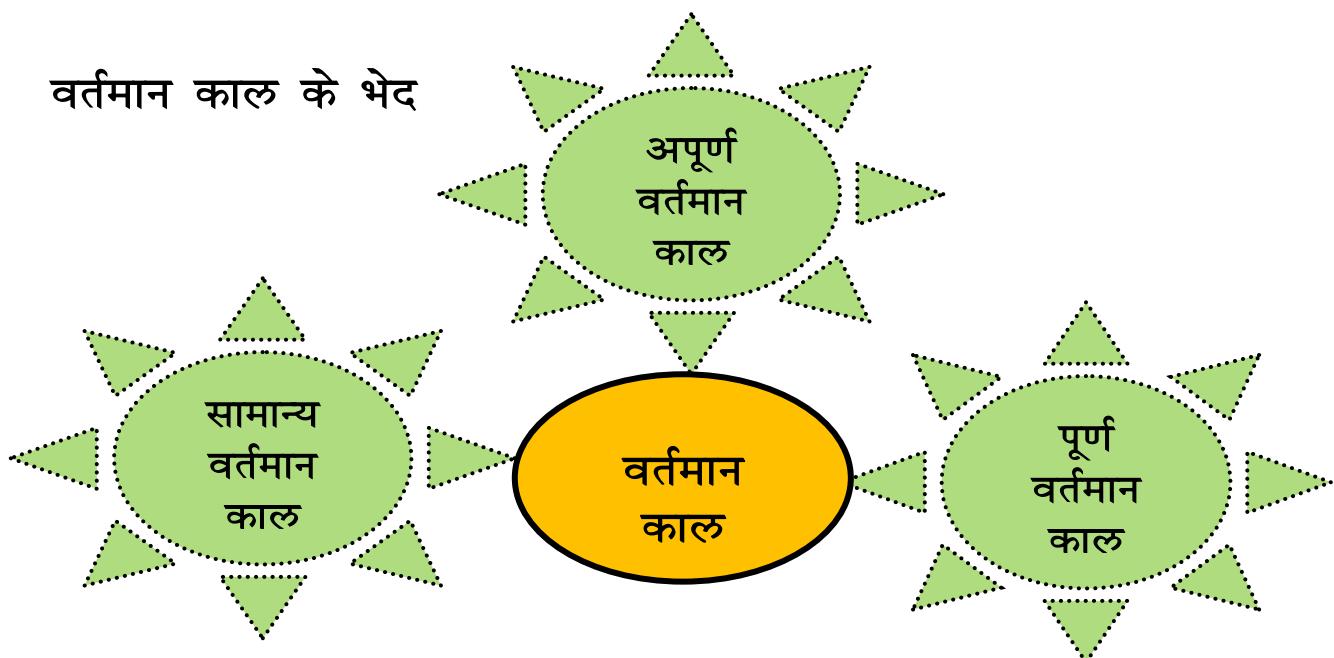


उदाहरण :

१. बच्चे **खेल रहे** हैं।
२. कोयल **गाती** है।
३. बच्चों ने कविता याद **कर ली** है।



वर्तमान काल के भेद



(क) सामान्य वर्तमान काल (Simple Present) : क्रिया के जिस रूप से कार्य के जारी रहने का बोध सामान्य ढंग से हो, उससे अपूर्णता अथवा संदेह का संकेत न मिले, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।



ध्यान दीजिए :-

सामान्य वर्तमान काल में मूल धारु के साथ 'ता है', 'ती है', 'ते हैं', 'ते हो' आदि प्रत्यय लगाए जाते हैं।

उदाहरण :

१. माँ खाना **बनाती है।**
२. पंछी आकाश में **उड़ते हैं।**
३. तुम **पढ़ते हो।**
४. पिता जी दफ्तर **जाते हैं।**
५. रमा मुझे **समझाती है।**



उपर्युक्त वाक्यों में बनाती है, उड़ते हैं, पढ़ते हो, जाते हैं, समझाती है आदि क्रियाओं से कार्य के जारी रहने का बोध सामान्य ढंग से हो रहा है, कार्य के अपूर्ण रहने अथवा उसमें संदेह होने का संकेत नहीं है, अतः यह सामान्य वर्तमान काल है।

(ख) **अपूर्ण वर्तमान काल** (Present Continuous) : क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि प्रस्तुत समय में कार्य पूर्ण नहीं हुआ, अभी जारी है, वह **अपूर्ण वर्तमान काल** होता है।



ध्यान दीजिए :-

अपूर्ण वर्तमान काल में मूल धातु के साथ 'रहा है', 'रही है', 'रहे हैं', 'रही हैं' आदि लगाए जाते हैं।

उदाहरण :



१. सोनाली विद्यालय **जा रही है**।
२. आकाश में तारे **चमक रहे हैं**।
३. मीना सब्ज़ी **काट रही है**।
४. बच्चे क्रिकेट **खेल रहे हैं**।
५. तोता अमरुद **खा रहा है**।



उपर्युक्त वाक्यों में सोनाली का विद्यालय जाना, तारों का चमकना, सब्ज़ी का कटना, बच्चों का खेलना और तोते का अमरुद खाना आदि

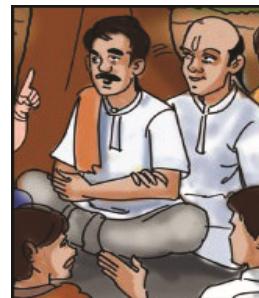
क्रियाओं का जारी रहना बताया गया है अर्थात् कार्य पूर्ण नहीं हुआ है।
अतः यह क्रिया के रूप अपूर्ण वर्तमान काल के हैं।

(ग) पूर्ण वर्तमानकाल (Present Perfect) : क्रिया के जिस रूप से

यह बोध हो कि कार्य बहुत पहले ही पूरा हो चुका है, वह पूर्ण वर्तमान होता है।

उदाहरण :

१. मैंने यह पुस्तक **पढ़ी है।**
२. सुशांत ने खाना खा **लिया है।**
३. वे चले **गए हैं।**
४. प्रधानमंत्री ने बैठक **बुलाई है।**
५. माँ ने बहुत सारी रोटियाँ **बनाई हैं।**



इन वाक्यों में पुस्तक पढ़ने का, खाना खाने का, जाने का, बैठक बुलाने का तथा रोटियाँ बनाने का कार्य बहुत पहले पूर्ण होने की सूचना मिलती है, अतः यह पूर्ण वर्तमान काल है।

३. भविष्यत काल (Future Tense) : क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा (न हो चुका है, न हो रहा है), उसे भविष्यत काल कहते हैं।

उदाहरण :

१. मैं स्कूल **जाऊँगा।**
२. दादी **आएँगी।**
३. मुझे सफलता अवश्य **मिलेगी।**



इन वाक्यों की क्रियाओं से ज्ञात होता है कि कार्य आने वाले समय में होना है, अतः इनमें भविष्यत काल है।

भविष्यत काल के भेद—



(क) **सामान्य भविष्यत काल (Indefinite Future):** क्रिया के जिस रूप आने वाले समय में कार्य होने की सूचना साधारण ढंग से मिले, कोई संदेह अथवा शर्त न हो, उसे सामान्य भविष्यत काल कहते हैं।



ध्यान दीजिए :-

सामान्य भविष्यत काल में मूल धातु में ‘ए’, ‘ऐ’, ‘ओ’, ‘ऊ’ आदि में बदल करके उसके साथ में ‘गा’, ‘गी’, ‘गे’ लगाए जाते हैं।

उदाहरण :

१. हम क्रिकेट जरूर **जीतेंगे**।
२. शालिनी कविता **सुनाएगी**।
३. सर्दी शुरू हो **जाएगी**।
४. आप सफल जरूर **होंगे**।
५. दीपू जूते पॉलिश **करेगा**।

(ख) **संभाव्य भविष्यत काल** : क्रिया के जिस रूप से बोध हो कि आने वाले समय में कार्य होने की संभावना तो है परंतु पूरा निश्चय नहीं है, उसे 'संभाव्य भविष्यत काल' कहते हैं।



ध्यान दीजिए :-

संभाव्य भविष्यत काल में वाक्यों में 'शायद', 'संभवतः', 'संभव है', 'हो सकता है' आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

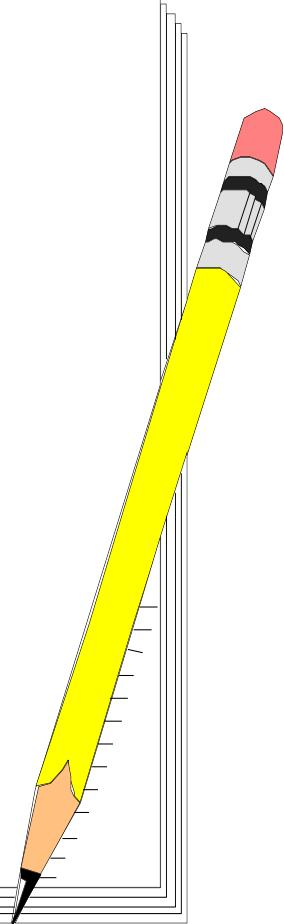
उदाहरण :

१. पिता जी **शायद** खिलौने लाएँ।
२. **संभव है**, आज कोई चिट्ठी आए।
३. **संभवतः** वर्षा होगी।
४. **हो सकता है**, वह नहीं भी आए।
५. **शायद** राहुल चाचा जी के घर गया होगा।

इन वाक्यों के क्रिया—रूपों से भविष्य में होने वाले कार्य की संभावना तो प्रकट होती है परंतु निश्चय से कुछ नहीं कहा जा सकता। अतः यहाँ ‘संभाव्य भविष्यत काल’ है।

हमने सीखा :—

- क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने की सूचना मिले, उसे ‘काल’ कहते हैं।
- काल तीन प्रकार के हैं— भूतकाल, वर्तमान, भविष्यत काल।
- प्रत्येक काल के सूचक सामान्यतः क्रिया में दिखाई देते हैं, जैसे— वर्तमान काल के लिए है/हो/हूँ/हैं; भूतकाल के लिए था/थी/थे भविष्यत काल में गा/गी/गे का प्रयोग मिलता है।



* * * * *

इकाई २ः वाक्यांश के लिए एक शब्द

 पाठ के उद्देश :—

- वाक्यांश के अर्थ से परिचित होंगे।
- वाक्यांश की परिभाषा से परिचित का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- वाक्यांश के लिए एक शब्द के उदाहरणों से अवगत होंगे।
- भाषा को सुंदर, सजीव और प्रभावशाली बनाने में वाक्यांश के महत्व से परिचित होंगे।
- व्याकरण ज्ञान की ओर रुचि बढ़ेगी।

भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोलकर हम भाषा को प्रभावशाली और आकर्षक बनाते हैं। उदाहरण — राहुल के पिता रोगियों की चिकित्सा करते हैं। यहाँ अनेक शब्दों अर्थात् वाक्यांश के स्थान पर हम एक ही शब्द ‘चिकित्सक’ का प्रयोग कर सकते हैं। ऐसे शब्दों के प्रयोग से मनुष्य कम—से—कम शब्दों में अधिक—से—अधिक भाव व्यक्त कर सकता है।

इसलिए मनुष्य ने ऐसे शब्द खोज निकालें जिसमें एक शब्द में एक पूरे वाक्य का अर्थ समाया हुआ हो। इसी से वह कम समय में अपने

अधिक भाव व्यक्त करने में सफल हुआ। ऐसे शब्दों के ज्ञान से हम में अपनी बात कम—से—कम शब्दों में कहने और लिखने की क्षमता आती है।

कम शब्दों में बात बताना भी एक कला है, इससे भाषा सजीव, प्रभावशाली और सुंदर बनती है। भाषा में संक्षिप्तता, प्रवाह और सरलता लाने के लिए हम अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करते हैं। लिखने में संक्षिप्तता और अभिव्यक्ति में कुशलता लाने के लिए विद्यार्थियों को इन शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए आज वाक्य या वाक्यांश के स्थान पर एक उपयुक्त शब्द का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :



१. जो सोने के गहने बनाता है — **सुनार**
२. प्रत्येक दिन — **प्रतिदिन**
३. जो दिखाई न दे — **अदृश्य**
४. शीघ्र नष्ट होने वाला — **क्षणभंगुर**
५. कक्षा में साथ पढ़ने वाला — **सहपाठी**

यहाँ वाक्यांश के लिए एक शब्द के निम्नलिखित उदाहरण दिए जा रहे हैं :—

सूची २.१

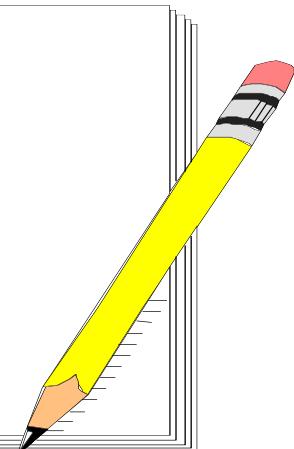
	वाक्यांश	एक शब्द
१	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
२	बुरी गंध	दुर्गंध
३	अच्छी गंध	सुगंध
४	जो स्वयं पर निर्भर हो	आत्मनिर्भर
५	रक्षा करनेवाला	रक्षक

६	जो दूसरों की भलाई करता है	परोपकारी
७	जो आज्ञा का पालन करता है	आज्ञाकारी
८	देश—विदेश में घूमनेवाला	पर्यटक
९	जिसकी कोई सीमा न हो	असीम
१०	बिना विचार के किया गया विश्वास	अंधविश्वास
११	जो खेती करता है	किसान
१२	जिसका अनुभव किया गया हो	अनुभूत
१३	नभ में घूमनेवाला	नभचर
१४	जो शाक—सब्जी खाता है	शाकाहारी
१५	जो मांस खाता है	मांसाहारी
१६	जो स्त्री अभिनय करे	अभिनेत्री
१७	नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित
१८	जो बुरे मार्ग पर चलता है	कुमार्गी
१९	जिसकी तुलना न हो	अतुलनीय
२०	जिससे कोई परिचय न हो	अपरिचित
२१	अनेक भाषाओं को बोलनेवाला	बहुभाषी
२२	कविता लिखनेवाला	कवि
२३	जो अपने देश का हो	स्वदेशी
२४	जो दूसरे देश का हो	विदेशी

२५	जो लोगों में प्रिय है	लोकप्रिय
२६	जिसका कोई शत्रु नहीं जन्मा हो	अजातशत्रु
२७	जिसकी आत्मा महान हो	महात्मा
२८	मेघ की भाँति गरजनेवाला	मेघनाद
२९	सात दिनों का समूह	सप्ताह
३०	बच्चों के लिए काम की वस्तु	बालोपयोगी

हमने सीखा :—

- अपनी बात कम—से—कम शब्दों में कहने और लिखने के लिए वाक्यांश का प्रयोग होता है।
- वाक्यांश के प्रयोग से भाषा सजीव और आकर्षक होती है।



* * * * *

इकाई ३ : पर्यायवाची शब्द (Synonyms)



पाठ के उद्देश्य :-

- ⇒ पर्यायवाची शब्द से अवगत होंगे।
- ⇒ भाषिक क्षमताएँ विकसित होंगी।
- ⇒ शब्द—भंडार में वृद्धि होंगी।
- ⇒ व्याकरण की ओर अभिरुचि बढ़ेगी।

हम जानते हैं कि भाषा के द्वारा मनुष्य अपने मन के भावों या विचारों का आदान—प्रदान करता है। यह आदान—प्रदान तभी सही ढंग से हो पाता है यदि इसमें सही शब्दों का प्रयोग हो। इसलिए भाषा के अधिक—से—अधिक शब्दों को सीखने का प्रयास करना चाहिए।

भाषा में शब्दों का विशेष महत्व होता है। अच्छे भाषण या लेखन में शब्द—भंडार का विशेष योगदान होता है। इनके प्रयोग से हम अपने संभाषण और लेखन में गहराई ला सकते हैं। प्रत्येक भाषा में एक ही अर्थ के लिए कई शब्दों का प्रयोग होता है। ऐसे शब्दों का अर्थ लगभग समान होता है।

हर भाषा में किसी भाव को प्रकट करनेवाले अनेक शब्द हो सकते हैं। एक शब्द के स्थान पर उसके पर्यायवाची शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए कपड़े के स्थान पर वस्त्र का प्रयोग देखा जा सकता है। किंतु लोक व्यवहार, शास्त्र आदि के संदर्भ में समानार्थी शब्दों के प्रयोग में विवेक की आवश्यकता रहती है। वहाँ प्रसंग के अनुरूप सही शब्द चुनना चाहिए। सुंदर सामान्य विशेषण है, किंतु ऐसा सुंदर दृश्य, जहाँ मन रम जाए उसे ‘मनोरम’ कहना ठीक होगा। आग और अग्नि पर्यायवाची हैं किंतु यज्ञ के प्रसंग में ‘अग्नि’ का प्रयोग उचित होगा। परंपरा में पूज्य व्यक्ति को

चरण—वंदन किया जाता है, चरण के पर्यायवाची पैर का प्रयोग उचित नहीं है।

पर्यायवाची शब्द का अर्थ है—‘समान अर्थवाला’। जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो पर उनके शब्द रूप भिन्न हों, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। प्रायः ऐसे शब्दों को एक—दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया जा सकता है। पर्यायवाची शब्दों से भाषा की समृद्धि का ज्ञान होता है।



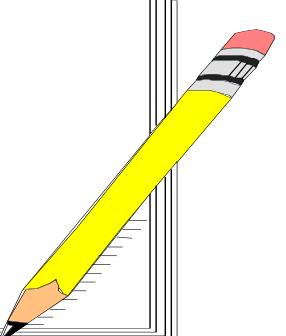
परिभाषा :—

समान अर्थ वाले शब्दों को ‘पर्यायवाची’ शब्द कहते हैं।

यहाँ पर्यायवाची शब्द के लिए निम्नलिखित उदाहरण दिए जा रहे हैं :—

सूची ३.१

क्रमांक	शब्द	पर्यायवाची शब्द	
१	दीपक	दिया, दीवा, दीप	
२	बगीचा	उपवन, बाग, उद्यान	
३	फूल	पुष्प, सुमन, कुसुम	
४	रात	रात्रि, निशा, विभावरी	
५	सोना	कनक, स्वर्ण, कंचन	
६	दुख	कष्ट, क्लेश, पीड़ा	
७	बादल	मेघ, जलधर, घन	
८	पृथ्वी	धरा, वसुधा, धरती	
९	नदी	सरिता, सलिला, तरंगिनी	
१०	विद्यार्थी	छात्र, शिष्य, अध्येता	
११	क्रोध	गुस्सा, आक्रोश, रोष	

१२	वृक्ष	पेढ़, तरु, विटप	
१३	महिला	नारी, स्त्री, औरत	
१४	सूर्य	दिनकर, रवि, सूरज	
१५	मित्र	दोस्त, सखा, मीत	
१६	अभिमान	घमंड, गर्व, अहंकार	
१७	अभिलाषा	इच्छा, कामना, मनोरथ	
१८	आकाश	आसमान, नभ, अंबर	
१९	निर्मल	स्वच्छ, पवित्र, शुद्ध	
२०	शरीर	काया, तन, देह	
२१	घर	गृह, सदन, आलय	
२२	अध्यापक	शिक्षक, गुरु, आचार्य	
२३	संसार	जग, जगत, दुनिया	
२४	पक्षी	खग, विहग, पंछी	
२५	अनुपम	अपूर्व, अनोखा, अद्भुत	
२६	सर्प	साँप, भुजंग, विषधर	
२७	जल	पानी, नीर, वारि	
२८	मनुष्य	इंसान, मानव, नर	
२९	माँ	माता, जननी, अंबा	
३०	प्रसिद्ध	नामी, विख्यात, मशहूर	

हमने सीखा :—

- समान अर्थवाले शब्दों को ‘पर्यायवाची शब्द’ कहते हैं।
- पर्यायवाची शब्दों से भाषा की समृद्धि का ज्ञान होता है।

* * * * *

इकाई ४: कारक (Case)

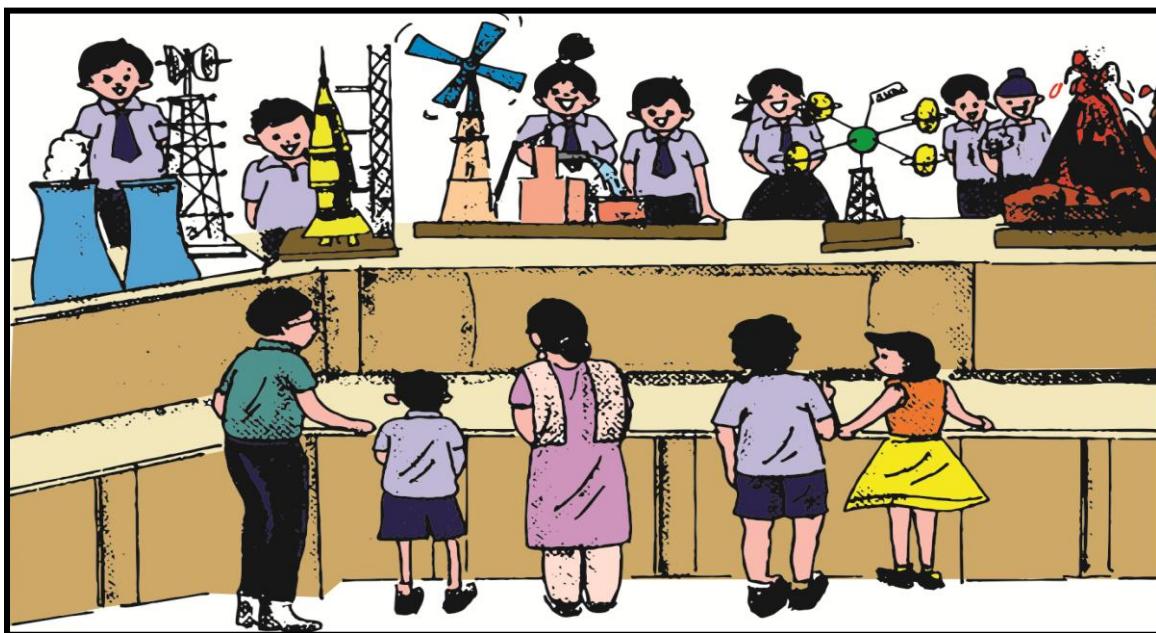


पाठ का उद्देश्य :-

- कारक का अर्थ एवं परिभाषा स्पष्ट करेंगे।
- कारक के चिह्नों से परिचित होंगे।
- कारक के भेदों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- कारक चिह्नों का वाक्यों में प्रयोग करेंगे।

कारक शब्द का अर्थ है 'करने वाला'। वाक्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया या अन्य शब्दों से उसका संबंध प्रकट हो, वे कारक कहलाते हैं। वाक्य में अनेक शब्द होते हैं। कारक व्याकरण का वह रूप है जो वाक्य में आए संज्ञा आदि शब्दों का क्रिया के साथ संबंध बताता है। शब्दों के एक साथ लिखने या बोलने से वाक्य नहीं बनते।

उदाहरण के लिए सचित्र वाक्य देखिए :-



हमारे विद्यालय एक विज्ञान प्रदर्शनी आयोजन किया गया। जिस छात्रों तरह—तरह मॉडल प्रदर्शन किया था। प्रदर्शनी देखने बहुत लोग आए थे। हमारे विज्ञान अध्यापक लोगों मॉडल बारे बता रहे थे।

ऊपर दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ने पर यह अधूरा लग रहा है। वाक्यों का अर्थ सही प्रकार से समझ नहीं आ रहा है। अब कुछ विभक्तियों की सहायता से इसे पुनः पढ़ते हैं —

हमारे विद्यालय में एक विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने तरह—तरह के मॉडल का प्रदर्शन किया था। प्रदर्शनी को देखने के लिए बहुत—से लोग आए थे। हमारे विज्ञान के अध्यापक लोगों को मॉडल के बारे में बता रहे थे।

अब सभी वाक्यों का अर्थ भली प्रकार से समझ में आ रहा है। इसका कारण है उपर्युक्त वाक्यों में नीले रंग में छपे शब्दों का प्रयोग, जिन्हें ‘विभक्तियाँ’ कहते हैं। ये विभक्तियाँ विभिन्न कारकों की हैं और ये ही शब्दों के बीच परस्पर संबंध बताती हैं।



परिभाषा :— संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे ‘कारक’ कहते हैं।

इनकी सहायता से हम वाक्य का अर्थ समझ पाते हैं। अगर हम वाक्य में इनकी जगह बदल दें, तो वाक्य का अर्थ भी बदल जाता है। जिन्हें परस्रग भी कहते हैं।

जैसे — राम ने श्याम को मारा।

राम को श्याम ने मारा।

❖ कारकों के प्रकार :— वस्तुतः हिंदी में आठ प्रकार के कारक होते हैं। प्रत्येक कारक की अपनी—अपनी विभक्तियाँ होती हैं। कारकीय संबंध को प्रकट करनेवाले चिह्नों को कारक—चिह्न या परस्ग कहते हैं। आठों कारकों के साथ जो चिह्न लगते हैं, उनकी तालिका नीचे दी गई है —

कारक	विभक्ति—चिह्न (परस्ग)	उदाहरण
कर्ता कारक	ने	रवि ने मनीष को बचाया।
कर्म कारक	को	हमने भूखे को खाना दिया।
करण कारक	से, के, द्वारा, के साथ	मैंने कलम से उत्तर लिखा।
संप्रदान कारक	के लिए, को	मीरा गरीबों को दान देती है।
अपादान कारक	से (अलग होना)	वह झूले से गिर पड़ा।
संबंध कारक	का, के, की, रा, रे, री, न, ने, नी	रीना का भाई बड़ा है।
अधिकरण कारक	में, पर	छत पर मत जाओ।
संबोधन	हे, अरे, अरी, ओ, ए, री आदि	ए! सुनो इधर आओ।

?

क्या आप जानते हैं?

- यद्यपि संबंध और संबोधन को भी सामान्यतः कारकों में ही गिना जाता है। परंतु इनका सीधा संबंध वाक्य की क्रिया के साथ नहीं होता, अतः इन्हें ‘कारक’ न कहकर ‘उपकारक’ कहते हैं।

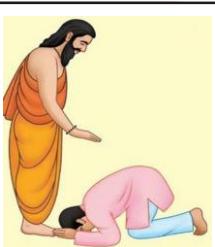
- कारकों के भेदों की विस्तारपूर्वक जानकारी निम्नलिखित है –

१. कर्ता कारक : कर्ता का अर्थ होता है करने वाला। प्रत्येक वाक्य में क्रिया होती है और जो उस क्रिया को करता है, वह **कर्ता** कहलाता है।

उदाहरण :

१. रोहन ने मीरा को खाना खिलाया।

२. जय ने गुरु जी को प्रणाम किया।

उपर्युक्त वाक्यों में खाना खिलाने का और प्रणाम करने का काम कौन कर रहे हैं? उत्तर है – रोहन और जय।

किसने खाना खिलाया?

उत्तर है— रोहन ने।

अतः रोहन कर्ता कारक है।

किसने प्रणाम किया?

उत्तर है— जय ने।

अतः जय कर्ता कारक है।

* कर्ता का विभक्ति—चिह्न है— ने परंतु यह आवश्यक नहीं है कि कर्ता कारक के साथ ने का प्रयोग हो।

जैसे — आरती दौड़ लगाती है। आरती दौड़ लगाएगी।

इन वाक्यों में विभक्ति—चिह्न का प्रयोग नहीं हुआ है।

२. कर्म कारक : कर्ता द्वारा किए जा रहे कार्य का जिस पर प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। जिस शब्द पर क्रिया का प्रभाव पड़े उसे कर्म कारक कहते हैं।

उदाहरण :

३. सुरेश ने बंदर को केला दिया।

४. भगवान् श्री कृष्ण ने कई राक्षसों को मारा।




यहाँ क्रिया का प्रभाव बंदर तथा राक्षसों पर पड़ा, अतः वे कर्म कारक हैं।

- * कर्म कारक को पहचानने के लिए क्या, किसको, कहाँ लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलेगा, वही कर्म कारक होगा।

प्रश्न— किसको केला दिया?

उत्तर— बंदर को।

अतः ‘बंदर को’ कर्म कारक है।

प्रश्न— किसको मारा?

उत्तर— राक्षसों को।

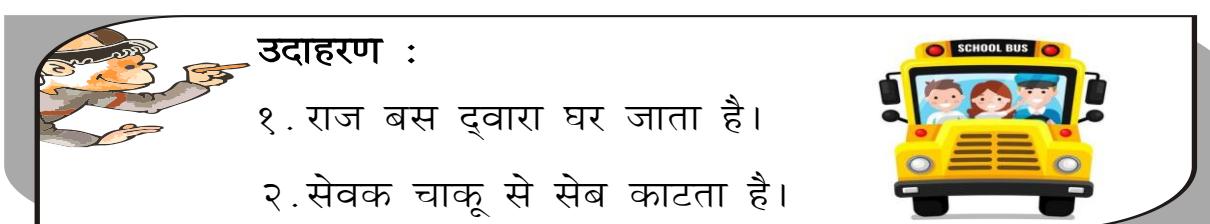
अतः ‘राक्षसों को’ कर्म कारक है।

- * कर्म कारक की विभक्ति को है, परंतु कभी—कभी कर्म कारक को के बिना भी हो सकता है।

जैसे— निशि क्रिकेट खेलती है।

(यह विभक्ति—चिह्न रहित कर्म कारक है।)

३. करण कारक : करण का अर्थ है — साधन। जिसकी सहायता से कोई कार्य संपन्न हो, वह संज्ञा/सर्वनाम पद करण कारक होता है।



यहाँ जाने का साधन बस है, तथा चाकू से सेब काटा जा रहा है, इसलिए बस और चाकू करण कारक हैं।

- * करण कारक की पहचान के लिए किससे, किसके द्वारा, किसके साथ लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलेगा, वही करण कारक होगा।

प्रश्न— राज किसके द्वारा घर जाता है? उत्तर— बस द्वारा।

प्रश्न— सेवक किससे सेब काटता है? उत्तर— चाकू से।

अतः ‘बस’ और ‘चाकू’ करण कारक हैं।

४. संप्रदान कारक : कर्ता द्वारा जिस संज्ञा के लिए कुछ दिया जाना है अथवा जिसके लिए कुछ किया जाना है, इस लक्ष्य का बोध करने वाला शब्द संप्रदान कारक कहलाता है। अर्थात् वाक्य में कर्ता जिसके लिए क्रिया करता है अथवा जिसको कुछ देता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।



उदाहरण :

१. मोहन ने अपने दादा जी के लिए चश्मा लाया।



२. सेठजी ने भिखारी को भोजन दिया।

संप्रदान करने के विभक्ति—चिह्न के लिए और को है।

- * संप्रदान कारक की पहचान के लिए क्रिया में ‘किसकी’, ‘किसके लिए’ प्रश्न करने पर उत्तर संज्ञा से मिलता है। जैसे —
प्रश्न— मोहन किसके लिए चश्मा लाया? उत्तर— दादा जी के लिए।
प्रश्न— सेठजी ने किसको भोजन दिया? उत्तर— भिखारी को।
अतः ‘दादा जी’ और ‘भिखारी’ संप्रदान कारक हैं, क्योंकि कर्ता द्वारा उसी के लिए क्रिया की जा रही है।

५. अपादान कारक : अपादान का अर्थ होता है — ‘अलगाव’ अर्थात् जहाँ से कोई वस्तु अलग हो जाए। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके अलग होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

- * अपादन कारक का विभक्ति—चिह्न ‘से’ है। अपादन कारक से अलगाव, भय, दूरी, तुलना, घृणा आदि का भाव प्रकट होता है। अपादन कारक की पहचान के लिए किससे लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर प्राप्त होता है, वही अपादन कारक है।

उदाहरण :



१. वह शेर की दहाड़ से डर गया। (भय)
२. चीता जंगल से बाहर आ गया। (अलगाव)
३. वीर का घर स्कूल से दूर नहीं है। (दूरी)
४. लता का गला आशा से मधुर है। (तुलना)
५. करीम को छिपकलियों से घृणा है। (घृणा)

यहाँ सभी क्रियाओं में किससे लगाकर प्रश्न पूछने से क्रमशः उत्तर प्राप्त होंगे — शेर की दहाड़ से, जंगल से, स्कूल से, आशा से, छिपकलियों से। अतः ये सभी अपादान कारक हैं।

६. संबंध कारक : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से ज्ञात होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं।

उदाहरण :



१. साधना अपनी बहन के साथ बाजार गई।
२. वह हमारा घर है।
३. यह मेरे पिता जी का बैग है।



* संबंध कारक संज्ञा से पहले **किसका** और **किसकी** लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर प्राप्त होगा, वह संबंध कारक है। जैसे ‘**किसकी** बहन’, ‘**किसका** घर’, ‘**किसका** बैग’ का उत्तर— अपनी बहन, हमारा घर, पिता जी का बैग। अतः ये संबंध कारक हैं।

७. अधिकरण कारक : संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे क्रिया के स्थान, अवसर और समय का ज्ञान हो, वह अधिकरण कारक कहलाता है। अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

उदाहरण :

१. कमरे में मेहमान बैठे हैं।
२. चिड़िया पेड़ पर गा रही है।



* अधिकरण कारक क्रिया में अधिकतर ‘कहाँ’ या ‘कब’ प्रश्न करने पर जो उत्तर प्राप्त होता है, वह अधिकरण कारक होता है। जैसे —

प्रश्न — मेहमान कहाँ बैठे हैं? उत्तर— कमरे में।

प्रश्न — चिड़िया कहाँ बैठी है? उत्तर— पेड़ पर।

अतः कमरे में, पेड़ पर अधिकरण कारक हैं, क्योंकि ये क्रिया के आधार का बोध करवा रहे हैं।

८. संबोधन कारक : संबोधन का अर्थ है — ‘पुकारना’। संज्ञा के जिस रूप से पुकारे जाने का बोध हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। संबोधन का संबंध वाक्य की क्रिया से नहीं होता। इसका प्रयोग किसी को बुलाने या संबोधित करने के लिए किया जाता है। इसके ‘हे’, ‘अरे’, ‘ओ’, ‘अजी’ आदि परसर्ग हैं।

उदाहरण :

१. अरेऽऽ! सुनो तो, तुम कहाँ से आए हो?
२. हे भगवान! इस बेचारे की रक्षा करना।

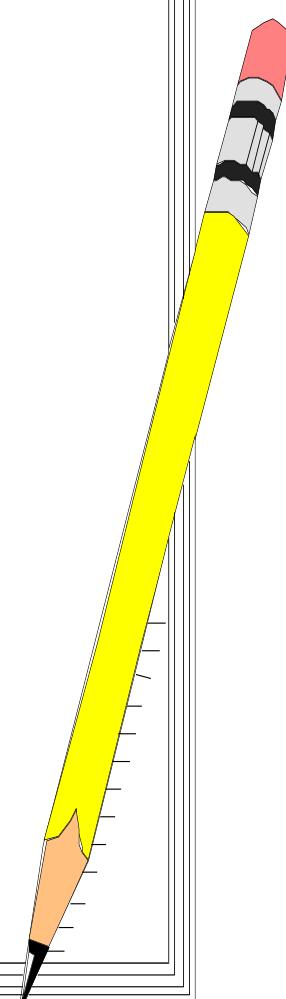


- * इसकी पहचान इसके चिह्न (!) से होती है। उपर्युक्त दोनों वाक्यों में ‘तुम’ और ‘बेचारे’ का प्रयोग संबोधन के रूप में हुआ है तथा अरे और हे परसर्ग लगे हैं। संबोधन करते समय बहुवचन में अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग नहीं किया जाता। जैसे — भाइयो—बहनो, बंधुओं।

हमने सीखा :—

- वाक्य में अन्य संज्ञा पदों के साथ क्रिया के संबंध को ‘कारक’ कहते हैं।
- कारक संबंध को कारक—चिह्न या परसर्ग द्वारा प्रकट किया जाता है।
- कारक के आठ प्रकार हैं —

१. कर्ता कारक	२. कर्म कारक
३. करण कारक	४. संप्रदान कारक
५. आपादान कारक	६. संबंध कारक
७. अधिकरण कारक	८. संबोधन कारक
- संबोधन करते समय बहुवचन में अनुनासिक चिह्न नहीं लगता।



* * * * *

इकाई ५: अपठित गद्यांश (Unseen passage)

पाठ का उद्देश्य :—

- अपठित गद्यांश के अर्थ एवं महत्व को समझेंगे।
- अपठित गद्यांश का आकलन करेंगे।
- अपठित गद्यांश के महत्वपूर्ण बिंदुओं से परिचित होंगे।
- अपठित गद्यांश में आए शब्दार्थ तथा मुहावरों से परिचित होंगे।

कक्षा के अनुसार पाठ्यपुस्तक में दिए गए गद्यांशों को शिक्षक विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं। विद्यार्थी अपने ज्ञान और अपनी क्षमता से उन गद्यांशों को समझते हैं। परंतु अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए केवल इतना ही काफी नहीं है। अपने ज्ञान और आकलन शक्ति को बढ़ाने के लिए स्वयं अध्ययन करना बहुत ही ज़रूरी है। इसलिए अपठित गद्यांश का अध्ययन करवाया जाता है।

अपठित गद्यांश, वे गद्यांश कहलाते हैं जो पहले पढ़े न गए हों तथा पाठ्य—पुस्तकों के अभ्यासक्रम में भी सम्मिलित ना हों। इनके द्वारा छात्रों को पाठ्य—पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य गद्यांशों के अर्थ समझने की क्षमता का निर्माण होता है। इन गद्यांशों को स्वयं पढ़कर छात्र पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हैं। इससे उनके अभिव्यक्ति कौशल का भी विकास होता है तथा किसी भी बात को जल्द—से—जल्द समझने की क्षमता आती है।

अपठित शब्द दो शब्दों के मेल से बना है — ‘अ + पठित’, जिसका अर्थ है— ‘बिना पढ़ा हुआ’। जो गद्यांश पहले से पढ़ा या पढ़ाया नहीं गया है, उसे ‘अपठित गद्यांश’ कहते हैं।

❖ अपठित गद्यांश का महत्व :—

- ☞ अपठित गद्यांश द्वारा हम भाषा की सरलता तथा अर्थ से परिचित होते हैं।
- ☞ भाषा में लिखे गए किसी भी अंश को समझने की योग्यता विकसित होती है।



अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए —

- गद्यांश को दो—तीन बार पढ़ लिया जाना चाहिए ताकि उसमें कहीं गई बातें स्पष्ट हो सकें।
- प्रश्नों को सावधानी से पढ़कर उन्हें भी अच्छी तरह समझकर प्रश्नों के उत्तर लिखने चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर लिखते समय गद्यांश की भाषा का प्रयोग न करके अपने शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त और प्रसंगानुकूल होने चाहिए।

❖ कुछ अपठित गद्यांश :

(१)

महात्मा गांधी का अंतिम स्वाधीनता संग्राम १९४२ का ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ था। यह आंदोलन ९ अगस्त, १९४२ से आरंभ होकर चार—पाँच

वर्षों तक चलता रहा। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति पर अंग्रेज़ों ने कांग्रेस से संधि कर ली। इसके फलस्वरूप १५ अगस्त, १९४७ को देश—विभाजन के बाद स्वतंत्रता प्राप्त हुई। हिंदू—मुस्लिम दंगे भड़क उठे। उन्होंने दंगों को रोकने के लिए प्राणों की बाज़ी लगा दी। अंत में हिंदू—मुस्लिम एकता के लिए बिड़ला भवन में प्रार्थना सभा में जाते हुए ३० जनवरी, १९४८ को गोली के शिकार हुए। इनकी समाधि राजघाट पर बनी हुई है। इन्होंने सेवा, त्याग, सत्य और अहिंसा के द्वारा विजय प्राप्त करके संपूर्ण विश्व को आश्चर्य में डाल दिया था। ये अनन्य देश प्रेमी थे, इसलिए लोग उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। इनके जीवन में राजनीति की अपेक्षा धर्म का अधिक स्थान था।

प्रश्न : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर गद्यांश के आधार पर लिखिए।

१. महात्मा गांधी का अंतिम आंदोलन कौन—सा था? यह कब प्रारंभ हुआ?
२. अंग्रेज़ों और कांग्रेस की संधि का क्या परिणाम हुआ?
३. उपर्युक्त गद्यांश में दिया गया मुहावरा ‘प्राणों की बाज़ी लगा दी’ का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
४. महात्मा गांधी की मृत्यु कैसे हुई?
५. महात्मा गांधी ने किन साधनों द्वारा विजय प्राप्त की?
६. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर :

१. महात्मा गांधी का अंतिम आंदोलन ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ था। यह ९ अगस्त, १९४२ को आरंभ हुआ।
२. अंग्रेज़ों और कांग्रेस की संधि के फलस्वरूप १५ अगस्त, १९४७ को देश विभाजन के बाद स्वतंत्र हो गया।

३. ‘प्राणों की बाज़ी लगाना’ का अर्थ है— जान न्यौछावर करना।
४. हिंदू—मुस्लिम एकता के लिए बिड़ला भवन के प्रार्थना सभा में जाते हुए महात्मा गांधी गोली के शिकार हुए।
५. महात्मा गांधी ने सत्य, त्याग, सेवा और अहिंसा के द्वारा विजय प्राप्त की।
६. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक ‘महात्मा गांधी’ है।

(२)

शिक्षा मनुष्य को मस्तिष्क और शरीर का उचित प्रयोग करना सिखाती है। वह शिक्षा जो मनुष्य को पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिंतन न दे, व्यर्थ है। यदि हमारी शिक्षा सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छे नागरिक नहीं बना सकती, तो उससे क्या लाभ? सहदय, सच्चा परंतु अनपढ़ मजदूर उस पढ़े—लिखे से कहीं अच्छा है, जो निर्दयी और चरित्रहीन है। संसार के सभी वैभव और सुख—साधन भी मनुष्य को तब तक सुखी नहीं बनाते जब तक मनुष्य को आत्मिक ज्ञान न हो। हमारे कुछ अधिकार और उत्तरदायित्व भी हैं। शिक्षित व्यक्ति को उत्तरदायित्वों का भी उतना ही ध्यान रखना चाहिए जितना कि अधिकारों का।

प्रश्न : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर गद्यांश के आधार पर लिखिए।

१. कैसी शिक्षा व्यर्थ है?
२. सच्ची शिक्षा का क्या लक्ष्य है?
३. मनुष्य को सच्चा सुख कब प्राप्त होता है?
४. अनपढ़ भी पढ़े—लिखे से अच्छा कब हो सकता है?
५. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

६. 'त्व' और 'हीन' प्रत्ययों से बना एक—एक शब्द अनुच्छेद से छाँटिए और उनसे एक—एक नया शब्द भी बनाइए।

उत्तर :

१. जो शिक्षा मनुष्य को पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिंतन न दे, वह व्यर्थ है।
२. मनुष्य को सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित एवं अच्छा नागरिक बनाना सच्ची शिक्षा का लक्ष्य है।
३. मनुष्य को सच्चा सुख तब प्राप्त होता है जब उसे आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति होती है।
४. जब अनपढ़, सहृदयी, सच्चा एवं ईमानदार होता है तब वह निर्दयी और चरित्रहीन पढ़े—लिखे से अच्छा हो सकता है।
५. गद्यांश के लिए 'सच्ची शिक्षा' यह उपयुक्त शीर्षक है।
६. त्व प्रत्यय से बना शब्द — १. उत्तरदायित्व २. मातृत्व
हीन प्रत्यय से बना शब्द — १. चरित्रहीन २. शक्तिहीन

(३)

मनुष्य बड़ा स्वार्थी और दंभी जीव है। वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता है। वह अपनी शेखी बघारता है। जो प्राणी उसकी सहायता करता है आदमी उसका उपकार मानना तो दूर बल्कि उसकी निंदा करता है। अपने हितैषी के साथ सदा छल करता है। उसे धोखा देता है। मनुष्य बड़ा खुदगर्ज है।

वह अपने को संसार का सबसे अधिक बुद्धिमान प्राणी समझता है। मित्र को धोखा देना, हितैषी के विरुद्ध बातें करना और माता—पिता की पगड़ी उछालना वह भली—भाँति जानता है। उसमें गर्व और झूठी शान होती

है। अपने आगे वह किसी को कुछ नहीं समझता है। गुस्से में वह कभी—कभी अनर्थ कर बैठता है।

जानवर भी अपने मालिक के साथ प्रेम, सद्भाव और समर्पण का भाव रखते हैं। कुत्ते तो स्वामीभक्त होते ही हैं परंतु हिंसक जानवर भी भोजन देने वाले को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।

लेकिन मनुष्य को कृतञ्ज बनते देर नहीं लगती। वह कब आपका कान काट ले, कहा नहीं जा सकता।

प्रश्न : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर गद्यांश के आधार पर लिखिए।

१. मनुष्य के स्वभाव में क्या दोष मिलते हैं?
२. स्वार्थी मनुष्य अपने प्रियजनों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं?
३. जानवरों में मनुष्यों की अपेक्षा क्या अच्छाई होती है?
४. स्वार्थी मनुष्य किस तरह का व्यवहार कर सकता है?
५. निम्नलिखित शब्दों के दो—दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

मनुष्य, संसार, माता, मित्र

६. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

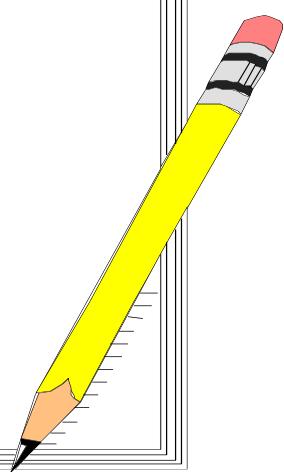
उत्तर :

१. मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी और दंभी होते हैं। शेखी बघारना और दूसरों के किए गए उपकारों को भूल जाना, दूसरों की निंदा करना, उनके साथ छल करना उसके स्वभाव के अवगुण हैं।
२. स्वार्थी मनुष्य अपने प्रियजनों के प्रति अविश्वास का भाव रखते हैं। धोखा देना उनकी प्रवृत्ति होती है।
३. जानवर स्वामीभक्त होते हैं। वे अपने मालिक के साथ प्रेम और समर्पण का भाव रखते हैं। वे भोजन देने वाले को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।

४. स्वार्थी मनुष्य खुदगर्ज़ होता है। जो भी मनुष्य उसकी सहायता करता है उसका उपकार मानना तो दूर बल्की उसकी निंदा करता है। मौका मिलने पर उसे धोखा देता है।
५. पर्यायवाची शब्द — १. मनुष्य — इंसान, आदमी
 २. संसार — दुनिया, जग
 ३. माता — माँ, जननी
 ४. मित्र — दोस्त, सखा
६. गद्यांश के लिए ‘स्वार्थी मनुष्य’ यह उपयुक्त शीर्षक है।

हमने सीखा :—

- अपठित अर्थात् जो पहले से पढ़ा न गया हो।
- अपठित गद्यांश द्वारा हम भाषा की सरलता तथा अर्थ से परिचित होते हैं।
- अपठित गद्यांश के अभ्यास द्वारा आकलन क्षमता तथा ज्ञान की वृद्धि होती है।



* * * * *

इकाई ६: पत्र लेखन (अनौपचारिक पत्र) (Letter writing-Informal)



पाठ का उद्देश्य :—

- पत्र की आवश्यकता का ज्ञान ग्रहण करेंगे।
- पत्र के प्रकार से परिचित होंगे।
- पत्र लेखन के नियमों से परिचित होंगे।
- पत्र के अंग का ज्ञान ग्रहण करेंगे।
- पत्र के प्रारूप से परिचित होंगे।

पत्र लेखन एक कला है। पत्र एक लिखित संदेश है। यह संदेश वह है, जिसे मौखिक रूप से न दिया जा सके। यह हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पत्र लिखित भाषा का एक रूप है, जिसके द्वारा हम दूर बैठे अपने मित्रों, रिश्तेदारों तथा प्रियजनों और किसी कार्यालय में अपनी बात पहुँचा सकते हैं। वर्तमान समय में संचार के अनेक नए—नए साधन हैं परंतु पत्र का आज भी बहुत महत्व है।

पत्र लिखने की प्रथा का आरंभ प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। आजकल टेलिफोन, मोबाइल आदि से भी अपने प्रियजनों अथवा संबंधित अधिकारियों से बातचीत की जा सकती है, फिर भी पत्र की अपनी उपयोगिता है।

पत्र अपनी बात को लिखित रूप से दूसरों तक पहुँचाने का साधन है। सरकारी अथवा गैरसरकारी कार्यालयों, दूर रहनेवाले सगे—संबंधियों तथा मित्रों से संपर्क स्थापित करने आदि विभिन्न कार्यों के लिए पत्र लिखे जाते हैं।

❖ आदर्श पत्र के गुण :—

१. **सरलता** :— पत्र में सरल भाषा का प्रयोग होना चाहिए ताकि पत्र पढ़ने वाले को स्पष्ट रूप से पूरी बात समझ में आ जाए।
२. **स्पष्टता** :— पत्र में जो भी बात लिखी जाए, स्पष्ट होनी चाहिए। वाक्यों की संरचना उलझी हुई तथा दोषपूर्ण नहीं होनी चाहिए।
३. **निश्चितार्थता** :— पत्र में प्रत्येक वाक्य का एक ही अर्थ निकलना चाहिए। यदि एक वाक्य के अनेक अर्थ निकलेंगे तो पत्र लिखने वाले के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाएगी।
४. **संक्षिप्तता** :— पत्र संक्षिप्त तथा विषय—वस्तु से संबंधित होना चाहिए।

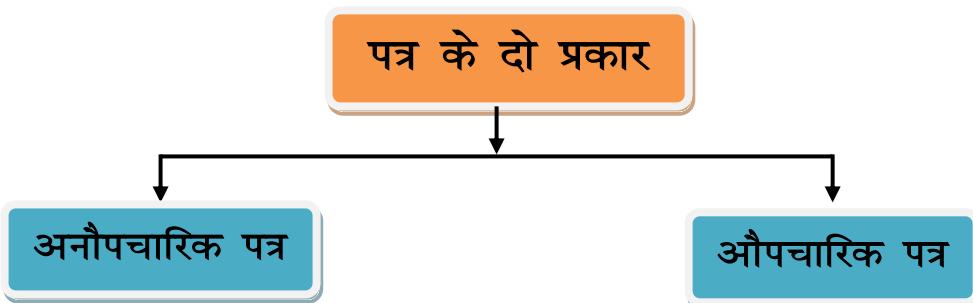
❖ पत्र के अंग :—

१. **स्थान व तिथि** :— पत्र के ऊपर बाई ओर अपना स्थान (जहाँ से आप पत्र लिख रहे हैं।) और उसके नीचे तिथि लिखनी चाहिए।
२. **संबोधन अथवा प्रशस्ति** :— तिथि के नीचे की पंक्ति में बाई ओर जिसे पत्र लिखा जा रहा है, उसके साथ संबंध के अनुसार उचित संबोधन लिखा जाना चाहिए।
३. **अभिवादन या शिष्टाचार** :— संबोधन के बाद नीचे थोड़ा हटकर संबंध के अनुसार उचित अभिवादन—शब्द (प्रणाम, नमस्ते आदि) लिखना चाहिए।
४. **प्रमुख विषय या कथ्य** :— इसके बाद पत्र का मूल विषय अर्थात् समाचार आदि लिखना चाहिए। इसे पत्र का कलेवर भी कहा जाता

है। यह ध्यान रखना चाहिए कि कलेवर (मुख्य विषय) न तो अनावश्यक सूचनाओं के कारण अधिक विस्तृत हो जाए और न इतना संक्षिप्त हो कि वांछित सूचना भी न दी जा सके।

५. **समाप्ति** :— मूल विषय के पश्चात पत्र को समाप्त करके नीचे बाई और पत्र—लेखक द्वारा अपने संबंध का निर्देश करते हुए अपना नाम लिखना चाहिए।
६. **पता** :— लिफाफे या पोस्टकार्ड पर जिसे पत्र लिखा गया हो उसका नाम, कार्यालय या मकान नंबर, गली या मुहल्ले का नाम, ग्राम या नगर, पोस्ट ऑफिस, जिले का नाम और अंत में सबसे नीचे पिन कोड लिखना चाहिए। पता स्पष्ट और सुपाठ्य तथा सावधानी से लिखा जाना चाहिए।

❖ पत्र के प्रकार :—



१. **अनौपचारिक पत्र** : जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, ऐसे व्यक्तियों को लिखे जानेवाले पत्र को अनौपचारिक पत्र कहते हैं। इसमें किसी प्रकार की औपचारिकता नहीं होती, अपने मन की बात और सुख—दुख का व्योरा रहता है।
२. **औपचारिक पत्र** : जिनके साथ हमारा निजी परिचय नहीं होता, उन्हें लिखे जाने वाले पत्र को औपचारिक पत्र कहते हैं। ऐसे पत्रों में संदेश की प्रमुखता रहती है। जैसे — प्रधानाचार्य को पत्र, संपादक को पत्र, कार्यालयीन पत्र आदि।

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप



६४, दयानंद विहार,

दिल्ली — ११००९२

३ जून, २०१२

प्रिय मीत,

तुम्हारी चाची,

सावली

टिकट

प्रति,

मीत शर्मा

२०५, वीर सावरकर मार्ग,

हैदराबाद — ५०० १३२.

प्रेषक :

सावली शर्मा

६४, दयानंद विहार,

दिल्ली — ११००९२.

अनौपचारिक पत्र—लेखन के मुख्य बिंदु

- ❖ सबसे ऊपर दाहिनी ओर पत्र लिखने वाले का पता लिखा जाता है परंतु आजकल कंप्यूटर व्यवस्था के कारण सभी औपचारिकताएँ बाईं ओर ही लिखने की नवीन शैली निकली है।
- ❖ इसके नीचे दिनांक लिखते हैं।
- ❖ इसके नीचे जिसे पत्र लिखते हैं, उसे संबोधित करते हैं; जैसे— आदरणीय दादा जी, पूजनीय नाना जी, माननीय गुरुजी, प्रिय दीदी आदि।
- ❖ इसके नीचे अभिवादन—सूचक शब्द लिखे जाते हैं। जैसे— प्रणाम, सादर प्रणाम, चरण—स्पर्श, नमस्कार, सुखी रहो, आशीर्वाद आदि।
- ❖ पत्र के पहले अनुच्छेद में सामान्य शिष्टाचार के शब्द लिखे जाते हैं। जैसे— आप सब कैसे हो? यहाँ हम सब कुशलपूर्वक हैं आदि।
- ❖ अगले अनुच्छेद में पत्र लिखने के कारण को विस्तार दिया जाता है।
- ❖ अंतिम अनुच्छेद में एक—दो वाक्यों में अन्य सदस्यों के प्रति अभिवादन लिखा जाता है।
- ❖ इसके नीचे बाईं ओर पत्र प्राप्त करनेवाले से संबंध लिखा जाता है; जैसे— तुम्हारा मित्र, तुम्हारी सहेली, आपका पुत्र, तुम्हारा भैया, आपकी भतीजी आदि।
- ❖ इसके नीचे अपना नाम लिखा जाता है।

अनौपचारिक पत्र का एक उदाहरण :—

भेजनेवाले का पता ←	५९, रेजीडेंसी रोड बंगलौर — ५६० ००१
दिनांक ←	३१ मई, २०१२
संबोधन ←	प्रिय सुशांत,
अभिवादन ←	सप्रेम नमस्ते।
पत्र की विषयवस्तु ←	<p>तुम्हें याद ही होगा कि सात जून को मेरा जन्मदिन होता है। हर बार की तरह इस बार भी मेरे माता—पिता जन्मदिवस के उपलक्ष्य में पार्टी का आयोजन कर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी छोटी बहन के साथ अवश्य आओ।</p> <p>इस बार नयापन लाने के लिए पार्टी का विषय निश्चित किया है और विषय है — खेल। सभी व्यवस्था खेल के मैदान के अनुरूप होगी। कमरे में हरे रंग का गलीचा बिछा होगा जो घास—जैसा दिखेगा। सजावट भी खेल के मैदान की तरह होगी। मेरे सभी मित्रों को ट्रैक सूट, स्पोर्ट्स शूज या किसी खेल की ड्रेस में ही आना होगा। अब सोच लेना क्या पहनना चाहोगे। खाने—पीने में भी कुछ नवीनता होगी, जो अभी नहीं बताऊँगा।</p> <p>यह ‘विषय—पार्टी’ शाम ५ बजे से ७ बजे तक हमारे घर पर ही होगी। मुझे कुछ कामों में तुम्हारी मदद चाहिए, अतः तुम ४ बजे पहुँच जाना।</p> <p>अपने माता—पिता को मेरा प्रणाम और छोटी पिंकी को मेरा प्यार।</p>
समापन ←	तुम्हारा दोस्त
नाम ←	अंकित

१. मित्र को जन्मदिन पर बधाई देने के लिए पत्र लिखिए।

५१५—प्रताप चौक,
नई दिल्ली — ११००९०
४ मई, २०१२



प्रिय आशिष,

तुम्हारा भेजा निमंत्रण—पत्र मिला। जन्मदिन पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

मैं १२ मई को जालंधर जाऊँगा। वहाँ मेरी मौसेरी बहन का विवाह है। मेरी इच्छा थी कि तुम्हारे जन्मदिन १३ मई पर मैं स्वयं आकर तुम्हें बधाई दूँ। पर मेरा जालंधर जाना भी जरूरी है। माता जी और पिता जी की ओर से भी बधाई स्वीकार करो। तुम इसी प्रकार सदा स्वस्थ और प्रसन्न रहो।

तुम्हारा मित्र,
लवेश

टिकट

प्रति,
आशीष खन्ना
५१५—प्रताप चौक
नई दिल्ली — ११००९०.

प्रेषक :
लवेश कुमार
२५ नीति बाग,
नई दिल्ली — ११००९७.

२. बड़ी बहन के विवाह के लिए निमंत्रण—पत्र लिखिए।

बी—५५, वीरसरणी,
काली बाड़ी मार्ग,
कोलकाता — ७०००४६.
८ अप्रैल, २०१२
प्रिय रोमा,



बहुत दिनों से तुम्हारा कुशल समाचार प्राप्त नहीं हुआ है। आशा है, तुम सपरिवार कुशलता से होगी।

तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी बड़ी बहन जया की सर्गाइ कोलकाता के प्रसिद्ध व्यापारी श्री. भूपेंद्रनाथ के सुपुत्र श्री. नवदीप के साथ पक्की हो गई है। विवाह आनेवाली तारीख १० मई को होगा। तुम्हें सपरिवार इस मांगलिक कार्य में शामिल होना है। हम सब तुम्हारा बेसब्री से इंतजार करेंगे।

चाचा जी व चाची जी को मेरा नमस्कार।

अपने आने की सूचना अवश्य भेजना। हम तुम्हें लेने स्टेशन आ जाएँगे।

तुम्हारी सहेली,
रूपाली

३. पुरस्कार मिलने की सूचना देने के लिए अपने नाना जी को पत्र लिखिए।

६८८, आर मॉडल टाउन,
यमुनानगर।

८ अगस्त, २०१२
पूज्य नाना जी,
सादर चरण स्पर्श।



आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आज मुझे दसवीं की बोर्ड की परीक्षा में श्रेष्ठ अंक लाने के लिए 'प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

जनरल मोहयाल सभा द्वारा नई दिल्ली में आयोजित इस समारोह में ७० प्रतिशत से अधिक अंक लानेवाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। संस्था के अध्यक्ष रायज़ादा बी.डी. बाली द्वारा मुझे सम्मान—पत्र और सुंदर कलाई घड़ी दी गई।

आपके आशीर्वाद और उचित मार्गदर्शन के कारण ही मैं ९० प्रतिशत अंक प्राप्त कर सका। आदरणीय नानी जी को मेरा प्रणाम कहिएगा।

आपका प्रिय नाती,

ध्रुव

४. परीक्षा में फेल हुई सहेली को सांत्वना पत्र लिखिए।

सी—५० पॉकेट बी,

सिद्धार्थ पनक्लेव,

नई दिल्ली।

३१ अप्रैल, २०१२

प्रिय अंजली,

सप्रेम नमस्ते।



बहुत दिन से तुम्हें पत्र न लिख सकी। मैंने सुना कि इस बार तुम्हारा परीक्षा—फल ठीक नहीं आया। सुनकर बड़ा दुख हुआ। तुम्हारे दुख की कल्पना कर सकती हूँ। चिंता छोड़ो, जो हो गया, सो हो गया तुम्हारी तैयारी में ही कोई कमी रह गई होगी। अब आगे के लिए सावधान हो जाओ और अभी से ही खूब अच्छी तैयारी करो। जिन विषयों में बहुत कमज़ोर हो, उन पर अधिक ध्यान दो। तुम्हारी कक्षा में जो पाठ पढ़ाया जाए, उसको घर में पुनः पढ़कर उसके सभी प्रश्नों के उत्तर लिखने का प्रयास करो। लिखने से बड़ा लाभ होता है।

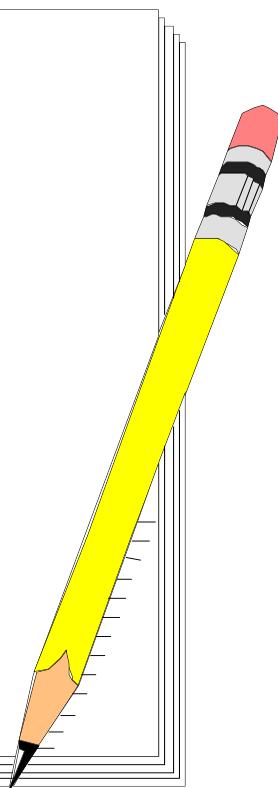
अपने माता—पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना।

तुम्हारी सहेली,

अस्मिता

हमने सीखा :—

- » पत्र एक लिखित संदेश है, जिसके माध्यम से हम अपने विचार तथा भाव दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।
- » पत्र के २ प्रकार होते हैं— १. अनौपचारिक,
२. औपचारिक।
- » पत्र के मंख्य ६ अंग होते हैं— १. पत्र लेखक का नाम, पता तथा तिथि
२. संबोधन तथा अभिवादन ३. पत्र का विषय ४. स्वनिर्देश तथा हस्ताक्षर
५. समाप्ति ६. पता।



* * * * *

इकाई ७: निबंध लेखन (Essay Writing)



पाठ के उद्देश्य :—

- ↳ निबंध के अर्थ एवं परिभाषा से परिचित होंगे।
- ↳ निबंध के प्रकारों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- ↳ निबंध की रूपरेखा का ज्ञान ग्रहण करेंगे।
- ↳ शब्द—ज्ञान तथा व्याकरण—ज्ञान में बुद्धि होगी।

मनुष्य विचारशील प्राणी है। वह आपस में अपने विचारों का आदान—प्रदान करता है। इन विचारों को एक साथ व्यवस्थित रूप से बाँधकर रखना बहुत जरूरी होता है। निबंध अपने इसी कार्य की पूर्ति करता है।

निबंध गद्य साहित्य की एक विशिष्ट विधा है। निबंध का अर्थ है— (नि + बंध)— ‘अच्छी तरह बँधा हुआ’। अपने विचारों, कल्पनाओं और भावों को एकत्रित रूप से गूँथना या बँधना ही निबंध कहलाता है।

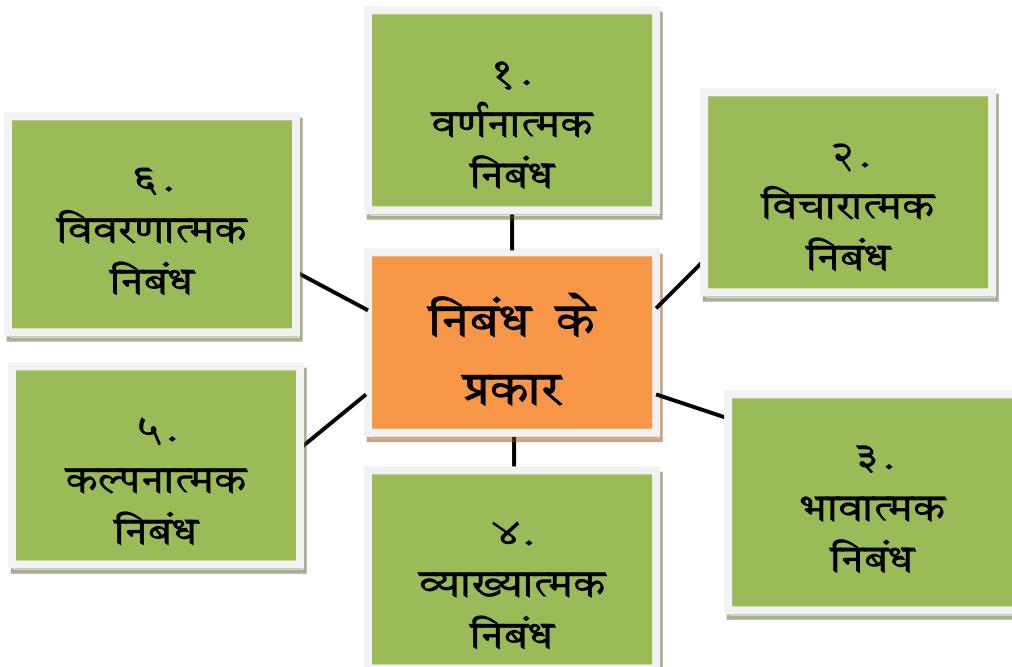
निबंध लेखन करने से विद्यार्थियों की बुद्धि का विकास होता है। उनकी विचारशक्ति बढ़ती है और उनमें अभिव्यक्ति कौशल का निर्माण होता है। कल्पनात्मक निबंध के माध्यम से उनकी कल्पनाशक्ति का भी विकास होता है।



परिभाषा :— किसी विषय पर क्रमपूर्वक तथा पूरी स्पष्टता के साथ अपने विचारों को व्यक्त करना ‘निबंध लेखन’ कहलाता है।

❖ निबंध के प्रकार :—

- साधारणतया निबंध ६ प्रकार के होते हैं : —



१. वर्णनात्मक निबंध (Descriptive Essay) :—

इसमें विषयवस्तु का वर्णन किया जाता है। ऐसे निबंधों में किसी ऋतु, मेले, प्राकृतिक दृश्य, निजी अनुभव, त्योहार, ऐतिहासिक स्थान (Historical place) आदि का वर्णन होता है। उदाहरण — मेरा प्रिय त्योहार, वर्षाऋतु, रेलवे स्टेशन पर एक घंटा आदि।

२. विचारात्मक निबंध (Reflective Essay) :—

इसमें साहस, प्रेम, वीरता, श्रद्धा आदि भाव तथा सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक आदि समस्याओं पर गंभीर विचार किया जाता है। उदाहरण— दहेज प्रथा, बढ़ती जनसंख्या, राष्ट्र—प्रेम आदि।

३. भावात्मक निबंध (Emotive Essay) :-

ऐसे निबंध भावपूर्ण (soulful) होते हैं। इन निबंध में भावों की प्रधानता रहती है। ऐसे निबंधों में परोपकार, गुण आदि का वर्णन किया जाता है। उदाहरण— मेरी व्यारी नानी, बुढ़ापा, नशा आदि।

४. व्याख्यात्मक निबंध (Expository Essay) :-

इस प्रकार के निबंधों में सूक्ष्म वाक्य एवं लोकोक्तियाँ, उद्धरण आदि विषय अधिक आते हैं।

उदाहरण— अंत भला तो सब भला, जैसी करनी वैसी भरनी आदि।

५. कल्पनात्मक निबंध (Imaginative Essay) :-

इस प्रकार के निबंधों में कल्पना की सहायता ली जाती है। कल्पना के घोड़े पर सवार होकर हम आकाश के तारे भी तोड़ सकते हैं। ऐसे निबंधों में इसी तरह कल्पना के माध्यम से हम असंभव को भी संभव कर सकते हैं।

उदाहरण — यदि मैं प्रधानमंत्री होता....., नदी की आत्मकथा आदि।

६. विवरणात्मक निबंध :-

इस प्रकार के निबंधों में किसी विशेष स्थान, स्मारक आदि का विवरण होता है। उदाहरण — ताजमहल, हिमालय आदि।

❖ निबंध लिखते समय हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए :-

१) विषय का चुनाव

निबंध लिखने के लिए विषय चुनते समय ऐसे विषय का चुनाव करना चाहिए जिसे आप अच्छी तरह से समझते हैं। ज्यादातर ज्ञान

(knowledge) और अनुभवों (experience) पर आधारित विषयों को चुनना चाहिए। इससे आप उस विषय पर अनेक उदाहरण (examples) दे सकते हैं।

२) भाषा—शैली

निबंध की भाषा सरल (simple), सुबोध (Easy to understand) और प्रवाहमयी होनी चाहिए। उसमें संस्कृत के कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो वाक्य छोटे—छोटे होने चाहिए। छोटे—छोटे वाक्यों में विषय को स्पष्ट करें। एक ही बात को घुमा फिराकर बार—बार या दूसरे शब्दों में नहीं कहना चाहिए। निबंध को प्रभावशाली (impressive) बनाने के लिए उसमें यथावसर मुहावरे (Idioms) और लोकोक्तियों (Proverbs) का प्रयोग करना चाहिए।

३) रूपरेखा का निर्माण

निबंध में विचारों और भावों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत (present) करने के लिए पहले एक कागज़ पर विषय की रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

निबंध की रूपरेखा के तीन अंग होते हैं।

- भूमिका
- विषय—विस्तार
- उपसंहार

क) भूमिका :—

इसमें निबंध के विषय का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है। इसे प्रस्तावना (Prologue) भी कहते हैं। किसी कवि की काव्यपंक्ति से इसकी शुरुआत कर सकते हैं।

ख) विषय—विस्तार :—

यह भाग निबंध का शरीर है। इसमें निबंध के विषय को अलग—अलग परिच्छेदों (paragraph) में विभाजित किया जाता है।

एक परिच्छेद में केवल एक ही बिंदु (point) का वर्णन होना चाहिए। संपूर्ण निबंध का लेखन चार परिच्छेद में लिखा जाना चाहिए। विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए मुहावरे और कहावतों का प्रयोग करना चाहिए। निबंध को आकर्षक बनाने के लिए लेखकों के विचारों का तथा किसी बोधपूर्ण कहानी की घटना का उल्लेख करना चाहिए।

ग) उपसंहार :—

यह निबंध का अंतिम भाग है। इसमें निबंध के विषय में लिखी जा चुकी बातों का निष्कर्ष होता है। किसी कविता की पंक्ति से निबंध का समापन किया जा सकता है।

हमें यह देखना है कि निबंध लिखते समय संक्षिप्त में रूपरेखा कैसे तैयार करेंगे?

मान लीजिए हमें ‘पुस्तकालय के लाभ’ पर निबंध लिखना है। इसकी रूपरेखा इस प्रकार बन सकती है।



पुस्तकालय के लाभ

- 1. भूमिका — जीवन में पुस्तकों का महत्व।
- 2. विषय—विस्तार — ‘पुस्तकालय’ का अर्थ।
— पुस्तकालयों की आवश्यकता क्यों पड़ी?



पुस्तकालय के लाभ—

- अनेक विषयों से संबंधित पुस्तकें एक ही स्थान पर उपलब्ध।



- शांत वातावरण में अध्ययन करने का आनंद।
- विद्यार्थियों को अपने विषय की गहन जानकारी प्राप्त करने का साधन।

३. उपसंहार

— विद्यार्थियों को पुस्तकालय का भरपूर लाभ उठाकर अपने ज्ञान का विस्तार करना चाहिए।

विचारात्मक निबंध का एक उदाहरण :—

अच्छा स्वास्थ्य

रूपरेखा :

- सबसे बड़ा धन — ‘अच्छा स्वास्थ्य’
- अच्छा स्वास्थ्य किसे कहते हैं?
- स्वास्थ्य का मन से संबंध
- व्यायाम का महत्व
- देश और समाज का विकास



भूमिका :

आज विज्ञान का युग है। संसार में विज्ञान के कारण ही लोगों को अनेक तरह की सुख—सुविधाएँ मिली हुई हैं। उनके सुख—भोग के हजारों साधन उपलब्ध हैं, परंतु यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं तो सब कुछ बेकार है। इसलिए कहा जाता है कि अच्छा स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है।

विषय—विस्तार :

प्रश्न है कि अच्छा स्वास्थ्य कहते किसे हैं? लोग मोटे लोगों को तंदुरुस्त मान लेते हैं। परंतु वास्तव में मोटा होना स्वस्थ होना नहीं है। जो

चुस्त हो, फुर्तीला हो, ऊर्जा से भरा हो, जिसमें कुछ—न—कुछ करने की उमंग हो, हँसता—खिलखिलाता हो वही स्वस्थ है। मोटे लोग अपने मोटापे के कारण सुस्त और आलसी हो जाते हैं। उन्हें स्वस्थ नहीं कहा जा सकता है।



स्वास्थ्य का संबंध मन से भी है। कहा गया है— स्वस्त शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। यह कहावत बिलकुल ठीक है। शरीर स्वस्थ होगा तो मन भी स्वस्थ होगा। हम जो पढ़ेंगे वह हमें याद रहेगा। हम चिंतन—मनन कर सकेंगे। नए प्रयोग कर सकेंगे। पर यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो सुस्त और आलसी बने रहेंगे।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सबसे पहले ज़रूरी है अच्छे विचार और अच्छी सोच। हमारे विचार अच्छे होंगे तो हम प्रसन्न रहेंगे और प्रसन्नता अच्छे स्वास्थ्य का आधार है। हमारा भोजन सादा हो, रोज अच्छे फल खाने चाहिए। इस तरह समय पर व्यायाम करें, समय पर भोजन करें, बुरी आदतों से दूर रहें तो स्वास्थ्य अच्छा हो सकता है।



आजकल शहरों में व्यायाम के लिए 'जिम' जाने का प्रचलन हो चला है। घर पर या पार्क में भी व्यायाम किया जा सकता है। आसन और प्राणायाम करने से भी शरीर और मन स्वस्थ रहते हैं।

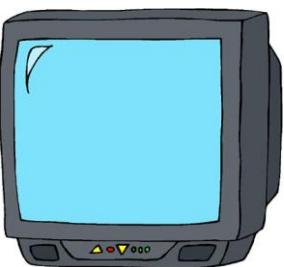
उपसंहार :

हम देश के भावी नागरिक हैं। देश की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए हमें अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिए। स्वस्थ शरीर से व्यक्ति का विकास होता है और व्यक्ति के विकास से समाज का विकास होता है। समाज के विकास से अपने—आप देश का

विकास होता है। इस प्रकार स्वस्थ रहकर ही हम समाज और देश के लिए कुछ कर सकते हैं।

* * *

दूरदर्शन



आज के युग को विज्ञान युग माना जाता है। संसार के सारे कार्यों में हमें विज्ञान का ही प्रभाव दिखाई देता है। यह हमारे जीवन के लिए दैवीय वरदान सिद्ध हुआ है। विज्ञान ने हमें मनोरंजन के अनेक साधन प्रदान किए हैं। मनुष्य जब अपने प्रतिदिन के कार्य से थक जाता है तो, उसे शांति की आवश्यकता होती है। मनोरंजन एक ऐसी वस्तु है, जिसे पाकर मनुष्य सब भूल जाता है और एक असीम आनंद का अनुभव करता है। दूरदर्शन एक ऐसा ही मनोरंजन का नवीनतम लाभदायक साधन है। उसे विज्ञान की देन कहा जा सकता है।

दूरदर्शन का आविष्कार इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक जॉन एल. वेर्ड ने सन् १९२६ ई में किया था, किंतु हमारे देश में इसका प्रचलन सन् १९६५ में हुआ। इस समय तो घर—घर में दूरदर्शन दिखाई देते हैं, जिनके माध्यम से लोग घर बैठे ही मनोरंजन करते हैं।



दूरदर्शन के द्वारा हम दूर—दूर घटित घटनाओं को तत्काल देख सकते हैं। यह रेडियो का ही विकसित रूप है। जो आनंद हम रेडियो द्वारा कानों के माध्यम से प्राप्त करते हैं, वही आनंद हमें दूरदर्शन के माध्यम से

आँखों से प्राप्त होता है। रेडियो से तो हमें केवल आवाज़ ही सुनाई देती हैं मगर दूरदर्शन से हम बोलने वाले की शक्ति एवं उसकी क्रियाओं को प्रत्यक्ष देख सकते हैं।

दूरदर्शन ज्ञान प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है। इससे हमें अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। हमारा बौद्धिक विकास होता है। दूरदर्शन ने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दूरदर्शन पर विविध विषयों पर आधारित विभिन्न कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। इन कार्यक्रमों को संबंधित छात्र विशेष रुचि से देखते हैं। उनके लिए वह फायदेमंद साबित होता है। छोटे-छोटे बच्चों के लिए दूरदर्शन पर अनेक बोधपूर्ण कहानियाँ दिखाई जाती हैं।

जहाँ दूरदर्शन से इतने लाभ हैं, वहाँ हानियाँ भी कुछ कम नहीं हैं। कुछ छात्र-छात्राओं को दूरदर्शन देखने की ऐसी आदत पड़ जाती है कि वे पढ़ाई-लिखाई छोड़कर हर समय दूरदर्शन देखने और उसकी बातें करने में ही अपना सारा समय बर्बाद कर देते हैं। ऐसे विद्यार्थी परीक्षा में असफल होते हैं। अधिक दूरदर्शन देखने और पास से देखने के कारण आँखों पर प्रकाश का ज़ोर पड़ता है और आँखें कमज़ोर हो जाती हैं।

दूरदर्शन का उचित उपयोग हमारे लिए उपयोगी तथा लाभदायक सिद्ध होता है तथा अनुचित और अधिक उपयोग अनुपयोगी तथा कष्टप्रद हो सकता है।

* * *

यदि मेरे पंख होते तो..



मैं एक छोटी लड़की हूँ। मेरे मम्मी—पापा मेरी हर छोटी—छोटी बात पर विशेष ध्यान देते हैं। घर से बाहर निकलने पर मुझे अनेक प्रकार की बातें सिखाते रहते हैं कि कौन—सा काम कैसे करना है? कई बार इन सब बातों को सुनकर मेरा मन करता है कि घर—बाहर के सब बंधन तोड़ दूँ और पक्षियों की तरह अपने पंख फैलाकर आकाश में उड़ जाऊँ। यह विचार आते ही मेरी कल्पना ने भी पंख फड़फड़ाए। मैं सोचने लगी कि काश, मेरे पंख होते। न जाने कब मेरी बाँहों में नहे—नहे पंख आकर जुड़ गए और मैं कल्पना—लोक की सैर करने निकल पड़ी।

यदि मेरे पंख होते तो मेरा सर्वप्रथम खेल होता— धरती और आकाश के बीच की दूरी को बार—बार नापना। मैं सवेरे ही जाग जाती और उड़ने लगती पूर्व दिशा की ओर सूरज को जगाने। प्रभात के उस बालसूर्य की सोने जैसी किरणें मेरे पंखों को सुनहरे रंग में रंग देतीं और मैं धीरे—धीरे उड़कर घर लौट आती। फिर शाम के समय मेरी उड़न—यात्रा सूर्यास्त देखने के लिए प्रारंभ हो जाती।

यदि मेरे पंख होते तो हरियल तोता, गानेवाली मैना, फुर्ग—फुर्ग उड़ती गौरेया, गुटरगुँ कबूतर, काली कोयल, काला कौआ—सब मेरे मित्र बन जाते। कितना मज़ा आता, जब मेरे जन्मदिन पर मेरे सारे पक्षी मित्र अपने रंग—बिरंगे पंख फैला कर नाचते और अपनी चोंच में ‘जन्मदिन’ के फूल भर कर मुझ पर बिखेर देते।

यदि मेरे पंख होते तो मुझे अपनी चर्च—चूँ करनेवाली पुरानी साइकिल से भी मुक्ति मिल जाती। बस झट पंख फैलाए और यहाँ जा, वहाँ जा। न भीड़ भरी सड़कें, न ट्रैफिक सिग्नल, न भारी ट्रैफिक जाम। समय की कितनी बचत होती। मैं अपने घर और कॉलोनी वालों के सारे काम उड़—उड़कर करती। कभी—कभी हवाई जहाज के साथ—साथ उड़ने का आनंद भी लेती।



यदि मेरे पंख होते तो मैं आज के वैज्ञानिक जीवन से उत्पन्न प्रदूषित वायु से बचकर ठंडी ताज़ी हवा का आनंद लेती। बचपन से ही मेरी इच्छा रही है कि मैं वन—उपवन का भ्रमण करूँ, फूल—पत्तों के सौंदर्य का आनंद लूँ। यदि मेरे पंख होते तो मेरी यह इच्छा अवश्य पूरी होती। जब मुझे भूख लगती, वृक्षों पर लगे मीठे—ताजे फल खाकर अपना पेट भरती। प्यास लगने पर बहते झारने का ताज़ा शीतल जल पीती। पेड़ों की ऊँची डाली पर बैठकर झूला झूलती। बादलों का स्पर्श मुझे रोमांच से भर देता। इस तरह पूरा दिन साथियों के साथ मौज़—मस्ती करने में बीत जाता।



मैं सोचती जा रही थी कि अचानक विचार आया कि कोई मुझे पिंजरे में बंद कर लेता, तो.....। मैं कल्पना—लोक से वापस लौट आयी और संकल्प किया कि कभी पक्षियों को पिंजरे में बंद नहीं करूँगी।

* * *

गणतंत्र दिवस (२६ जनवरी)



१५ अगस्त, १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ और २६ जनवरी, १९५० के पावन दिवस को भारतीय संविधान लागू कर भारत को संपन्न गणराज्य घोषित किया गया। प्रत्येक वर्ष २६ जनवरी को गणतंत्र—दिवस मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन भारतीय संविधान लागू हुआ था।

संविधान लागू करने के लिए २६ जनवरी की तिथि चुने जाने का विशेष कारण था। २६ जनवरी, १९३० को रावी नदी के तट पर पूर्ण स्वराज्य की माँग करते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए तीव्र आंदोलन का अलख जगाया गया था। स्वतंत्र भारत को गणराज्य घोषित करने के लिए इससे उपयुक्त अन्य तिथि हो ही नहीं सकती थी।

गणराज्य/गणतंत्र का अर्थ है—जनता का तंत्र।

जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलनेवाली शासन व्यवस्था गणतंत्र कहलाती है। गणतंत्र देश में रहनेवाले प्रत्येक नागरिक के अधिकार समान होते हैं, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, भाषा, वर्ण, राज्य का क्यों न हो। सभी नागरिक अपने मत का उपयोग राज्य प्रतिनिधियों को चुनने में कर सकते हैं। राष्ट्र का मुखिया राष्ट्रपति होता है।



स्वतंत्रता दिवस की भाँति गणतंत्र दिवस भी सारे देश में मनाया जाता है। इस दिन भी देश की आज़ादी के लिए प्राणों का बलिदान करनेवाले वीर

जवानों को याद करके उन पर फूल चढ़ाए जाते हैं और हमारी आज़ादी के प्रतीक तिरंगे झँडे को फहराया जाता है। इस दिन विद्यालयों एवं कार्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। ध्वजारोहण किया जाता है।



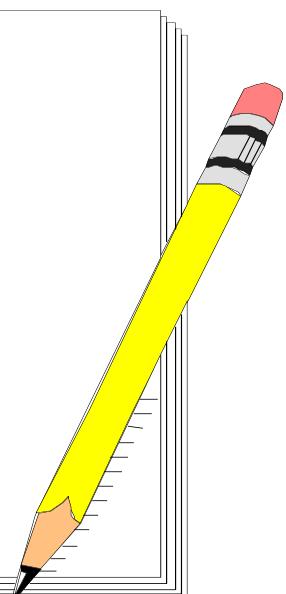
इस दिन का मुख्य आकर्षण दिल्ली में आयोजित गणतंत्र समारोह होता है। राष्ट्रपति भवन से राष्ट्रपति की सवारी निकलती है। सेना की विभिन्न टुकड़ियाँ मार्च कर भारत की सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करती हैं। उसके बाद विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति एवं विकास की झलक देनेवाली आकर्षक झाँकियाँ निकाली जाती हैं। रात्रि में राष्ट्रपति भवन और सरकारी भवनों पर प्रकाश—सज्जा की जाती है।

गणतंत्र दिवस हमें यह संदेश देता है कि संघर्ष और बलिदानों से प्राप्त हमारी स्वतंत्रता अमूल्य है। हमें व्यक्तिगत स्वार्थों को त्याग कर देश के विकास की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। इसी में गणतंत्र—दिवस की सार्थकता है।

* * *

हमने सीखा :—

- निबंध गद्य साहित्य की एक विशिष्ट विधा है।
- किसी विषय पर क्रमपूर्वक तथा पूरी स्पष्टता के साथ अपने विचारों को व्यक्त करना निबंध लेखन कहलाता है।
- साधारणतया निबंध ६ प्रकार के होते हैं।
- निबंध की रूपरेखा के तीन अंग होते हैं।
१) भूमिका २) विषय—विस्तार ३) उपसंहार



* * * * *

इकाई ८: चित्र कथा लेखन (Picture writing)

पाठ का उद्देश्य :—

- चित्र कथा लेखन की रूपरेखा समझेंगे।
- चित्र कथा लेखन के मुख्य बिंदुओं से परिचित होंगे।
- चित्र कथा लेखन का अभ्यास करेंगे।
- अपने शब्दों में चित्र आधारित कथा लेखन का प्रयास करेंगे।

अध्ययन में रुचि निर्माण करने के लिए विविध अध्ययन पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। उसमें चित्र कथा पद्धति एक मनोरंजनात्मक पद्धति है। यह एक दृश्य अध्ययन पद्धति है।

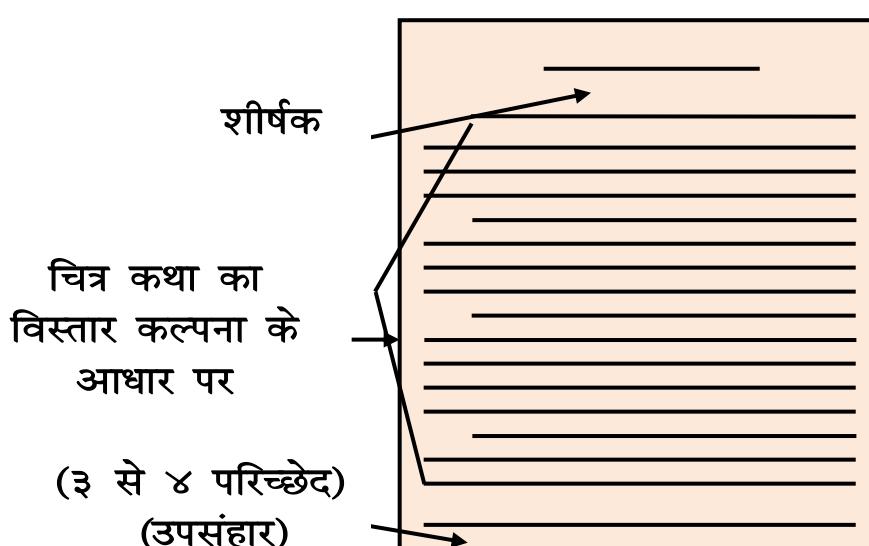
जब हम किसी चित्र को देखते हैं तब हम सोचने लगते हैं। चित्र में अपने विचारों को बाँधने की कोशिश करते हैं। कल्पना के आधार पर हम उस चित्र का वर्णन अपने शब्दों में करते हैं। इससे हमारी बौद्धिक और कल्पनाशक्ति का विकास होता है।

पत्र लेखन तथा निबंध लेखन की तरह चित्र कथा का वर्णन भी एक कला है। इसमें दों बातों की विशेष आवश्यकता होती है : चित्र अध्ययन और कल्पनाशीलता। इस तरह चित्र को ध्यान में रखकर अपने मन में उठे विचारों द्वारा उससे संबंधित कोई कहानी लिखी जाती है अथवा उसका वर्णन किया जाता है।

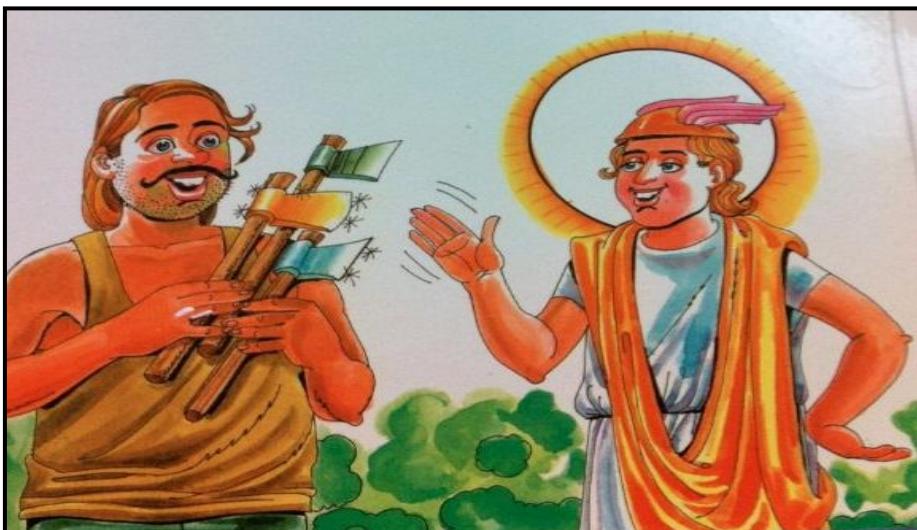
- चित्र कथा लेखन से पूर्व ध्यान रखने हेतु आवश्यक बातें :—

- चित्र को बार—बार ध्यानपूर्वक देखना चाहिए।
- चित्र में यदि कोई संकेत चिह्न हों तो उनका ध्यानपूर्वक अभ्यास करना चाहिए कि उन संकेतों का चित्र में क्या महत्व है।
- चित्र को देखकर मन में उठने वाले भावों को क्रमानुसार लिखना चाहिए।
- चित्र कथा लेखन में अनावश्यक बातें लिखकर उसे लंबा नहीं करना चाहिए।
- लिखित भाषा व्याकरण की दृष्टि से सरल होनी चाहिए ताकि आसानी से समझा जा सके।

- चित्र कथा लेखन की रूपरेखा :—



- चित्र कथा लेखन के निम्नलिखित उदाहरण :
(१)



ईमानदार लकड़हारा

एक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। वह रोज़ सुबह पास के जंगल में लकड़ी काटने जाता था और उन लकड़ियों को बेचकर अपने परिवार का पालन—पोषण करता था। एक दिन वह नदी के किनारे के पेड़ की लकड़ी काट रहा था। अचानक उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर नदी में गिर गई। उसने नदी में कुल्हाड़ी ढूँढ़ी परंतु उसे अपनी कुल्हाड़ी नहीं मिली। वह परेशान होकर नदी के किनारे बैठकर रोने लगा।

उस नदी में एक देव रहते थे। लकड़हारे के रोने की आवाज़ सुनकर वह नदी के बाहर निकल आए। उन्होंने लकड़हारे से पूछा, “तुम कौन हो और इस तरह रो क्यों रहे हो?”

लकड़हारे ने रोते हुए कहा, “देव, मैं एक गरीब लकड़हारा हूँ। मैं लकड़ी काटकर अपना गुज़ारा करता हूँ। आज इस पेड़ की लकड़ियाँ काट रहा था कि मेरी कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर नदी में गिर

गई। अब मैं अपने बच्चों को कैसे खिलाऊँगा? मेरे पास न तो पैसे हैं कि नई कुल्हाड़ी खरीद लूँ और न ही दूसरी कुल्हाड़ी मेरे पास है। अब मैं क्या करूँ?” वह फिर फफक—फफककर रोने लगा। लकड़हारे के कंधे पर हाथ रखकर देव बोले, “तुम रोना बंद करो, अभी मैं तुम्हारी कुल्हाड़ी निकाल लाता हूँ।” यह कहकर देव ने नदी में डुबकी लगाई और सोने की एक कुल्हाड़ी लाकर लकड़हारे से पूछा, “क्या यही तुम्हारी कुल्हाड़ी है?”

लकड़हारे ने एकदम से उत्तर दिया, “नहीं, यह नहीं है।” देव ने सोने की कुल्हाड़ी उसके पास छोड़कर फिर नदी में डुबकी लगाई और इस बार चाँदी की कुल्हाड़ी निकालकर लकड़हारे से पूछा, “तो फिर यह होगी तुम्हारी कुल्हाड़ी।” लकड़हारे ने हाथ जोड़कर कहा, “नहीं, यह भी मेरी नहीं है। मेरी कुल्हाड़ी तो लोहे की है।” देव चाँदी की कुल्हाड़ी भी उसके पास छोड़कर नदी में फिर चले गए और इस बार वे अपने साथ लोहे की कुल्हाड़ी निकालकर लाए तो लकड़हारे ने खुशी से उछलकर कहा, “यही है मेरी कुल्हाड़ी। आपका बहुत—बहुत धन्यवाद।”

इस पर देव ने लकड़हारे से कहा, “तुम बहुत ईमानदार हो। तुम्हारी ईमानदारी से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। सोने और चाँदी की कुल्हाड़ियाँ मैं तुम्हें इनाम में देता हूँ।” लकड़हारे ने देव का आभार व्यक्त किया और तीनों कुल्हाड़ियाँ और काटी हुई लकड़ियाँ लेकर घर को चल दिया।

शिक्षा — ईमानदारी का फल हमेशा अच्छा मिलता है।

(२)



बातूनी कछुआ

एक समय की बात है। पहाड़ों से घिरा एक तालाब था। उसमें एक कछुआ रहता था। कछुआ बहुत बातूनी था। प्रतिदिन दो हंस उस तालाब पर पानी पीने आते थे। धीरे—धीरे उनकी दोस्ती कछुए से हो गई। अपने बातूनी स्वभाव के कारण कछुआ घंटों उनसे बातें करता रहता।

एक बार गाँव में अकाल पड़ गया। गाँव के कुएँ सूख गए। तालाब का पानी भी सूख गया। पशु—पक्षी व लोग गाँव छोड़—छोड़कर जाने लगे। हंसों ने सोचा अब कहीं और चलना चाहिए। अपनी योजना के बारे में उन लोगों ने कछुए से बात की। कछुआ उड़ नहीं सकता था और भारी शरीर होने के कारण ज्यादा चल नहीं सकता था। इसलिए अपने मित्रों की बातें सुनकर वह उदास हो गया। उसने अपने मित्रों से कहा, “दोस्तो, अगर तुम लोग मुझे अकेला छोड़कर चले गए तो मैं क्या करूँगा?” हंसों ने कहा, “भैया,

हम तो उड़कर पहाड़ के उस पार वाले तालाब तक जल्दी से पहुँच जाएँगे, लेकिन तुम्हें तो वहाँ पहुँचने में वर्षों लग जाएँगे।”

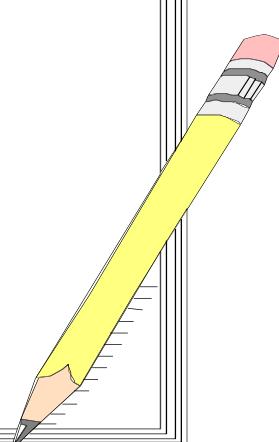
कछुए को एक उपाय सूझा। उसने कहा, “तुम लोग कहीं से एक लकड़ी ले आओ, तुम दोनों अपने मुँह से एक—एक सिरों को पकड़ कर रखना, मैं बीच में लटककर चलूँगा।” यह सुनकर हँसों ने कहा, “पर तुम्हारी बोलने की आदत बहुत है। अगर रास्ते में तुमने बोलने के लिए मुँह खोला तो गिरकर मर जाओगे।” कछुए ने बीच में न बोलने की कसम खाई।

कछुए को लेकर दोनों हँस उड़ चले। उड़ते—उड़ते वे लोग खेत के ऊपर से जा रहे थे। नीचे कुछ किसान अपने खेतों में काम कर रहे थे। जब उन्होंने कछुए को एक लकड़ी पर लटके देखा तो वे हँसने लगे और कछुए का मज़ाक उड़ाने लगे। कछुए से यह सहन नहीं हुआ। किसानों को जवाब देने के लिए उसने अपना मुँह खोला और नीचे गिर पड़ा।

शिक्षा — परिस्थिति को देखते हुए चुप रहना चाहिए।

हमने सीखा :—

- चित्र कथा लेखन की रूपरेखा।
- चित्र कथा लेखन के मुख्य बिंदुओं का ज्ञान।
- चित्र कथा लेखन का अभ्यास।
- चित्र पर आधारित कहानी लिखना।



* * * * *

इकाई ९: विज्ञापन लेखन (Advertisement writing)



पाठ का उद्देश्य :—

- विज्ञापन लेखन के अर्थ एवं परिभाषा को जानेंगे।
- विज्ञापन लेखन की रूपरेखा समझेंगे।
- विज्ञापन लेखन के मुख्य बिंदुओं से परिचित होंगे।
- विज्ञापन लेखन का अभ्यास करेंगे।
- उत्पादों से जुड़े छोटे—छोटे विज्ञापन लिखने का प्रयास करेंगे।

व्यवसायी अपनी उत्पाद वस्तु या सेवा से जुड़ी सूचना या संदेश अधिक—से—अधिक लोगों तक पहुँचाना चाहता है जिससे उसकी बिक्री में बढ़ोत्तरी हो तथा संबंधित जगत में वह खूब नाम कमाए। वह अपने उपभोक्ताओं (वह व्यक्ति जो उत्पाद या सेवा का उपयोग करता है।) तक अपनी वस्तु (उत्पाद वस्तु) या सेवा से जुड़ी सूचनाओं जैसे वह वस्तु या सेवा कहाँ प्राप्त हैं, उनकी किस्में तथा गुणवत्ता कैसी हैं आदि को पहुँचाकर अपनी उत्पाद वस्तु या सेवा की ओर उन्हें आकर्षित करता है। इन सुचनाओं अथवा संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए उसे एक माध्यम की सहायता लेनी पड़ती है। इसी माध्यम का नाम ही विज्ञापन है।

विज्ञापन शब्द, वि (विशेष) + ज्ञापन (जानकारी देना) के योग से बना है। इस प्रकार विज्ञापन का अर्थ किसी के बारे में विशेष जानकारी देना। विज्ञापन द्वारा किसी उत्पाद अथवा सेवा की विशेष सूचना या संदेश दिया जाता है जिससे उपभोक्ता या ग्राहक उस उत्पाद अथवा सेवा की आकर्षित

हो उसे खरीदने या लेने लगता है। इससे उस उत्पाद अथवा सेवा का विक्रय या माँग बढ़ती है।



परिभाषा :— किसी उत्पाद या सेवा के बारे में विशेष सूचना अथवा संदेश देते हुए लिखना ‘विज्ञापन लेखन’ कहलाता है।

विज्ञापन लेखन एक कला है। विज्ञापन लेखन के लिए विज्ञापन लेखन को बड़े मोहक तथा आकर्षक भाषा—शैली को अपनाना पड़ता है। इसकी आकर्षक भाषा—शैली ही ग्राहक को किसी वस्तु या सेवा खरीदने या पाने के लिए तत्पर करता है। विज्ञापन को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे कई अलग—अलग तरीके अपनाने पड़ते हैं।

लोगों तक विज्ञापन पहुँचाने के कई अलग—अलग माध्यम हैं। ये माध्यम प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया हैं। प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र, पत्रिका आदि आते हैं और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में रेडियो, टी.वी. चैनल आदि। दोनों के लिए विज्ञापन तैयार करने के तरीके भिन्न—भिन्न होते हैं।

विशेष रूप से विज्ञापन के दो प्रकार हैं —

कॉमर्शियल विज्ञापन — किसी उत्पाद वस्तु को बेचने के लिए जो विज्ञापन दिए जाते हैं, उन्हें कॉमर्शियल विज्ञापन कहा जाता है। इसमें ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए सुंदर / आकर्षक चित्रों द्वारा विज्ञापन प्रस्तुत किया जाता है।



क्लासीफाइड विज्ञापन — नौकरी, शोक संवेदना, नाम परिवर्तन, खोया—पाया नीलामी आदि से जुड़े विज्ञापन को क्लासीफाइड विज्ञापन कहते हैं। इस विज्ञापन में चित्र नहीं बनाए जाते।



विज्ञापन बनाते समय निम्नलिखित सोपानों पर विशेष ध्यान दिए जाते हैं—

शीर्ष पंक्ति (विज्ञापन का शीर्षक) Headline

विषयवस्तु (सामग्री) Main Text

प्रतीकचिह्न (व्यापारी चिह्न) Monogram, Logo

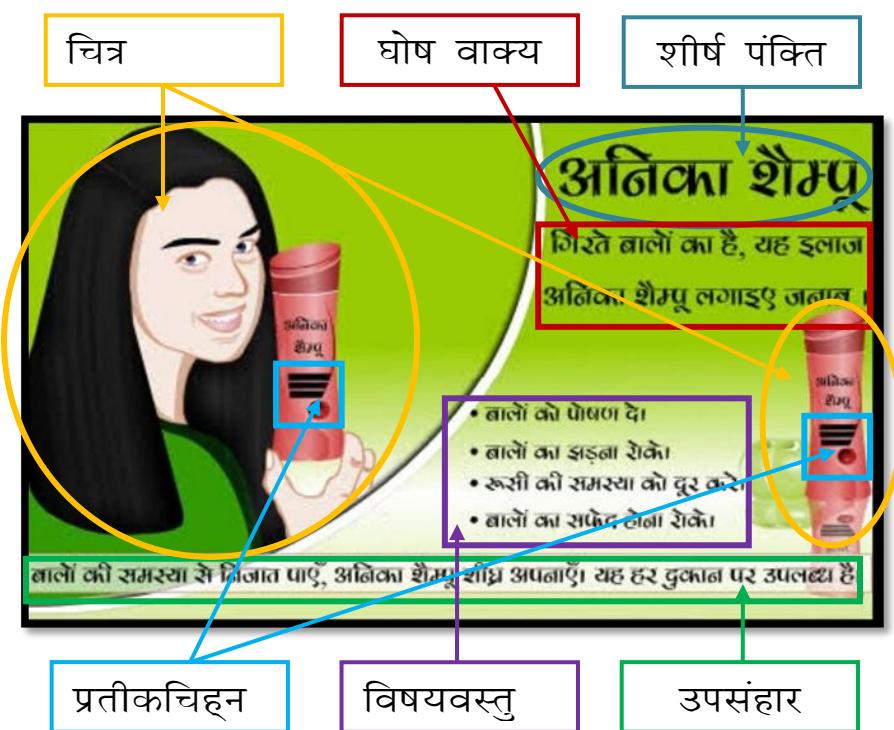
घोष वाक्य (विशेष पंक्ति) Punch Line

चित्र Picture

उपसंहार (अंतिम संक्षिप्त वाक्य) End

विज्ञापन बनाते समय आवश्यकतानुसार उपर्युक्त सोपानों का क्रम ऊपर या नीचे हो सकता है।

आइए, उपर्युक्त सोपानों को निम्न उदाहरण से समझते हैं —



❖ विज्ञापन लिखते समय हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान

देना चाहिए :—

- प्रस्तुतीकरण में नयापन हो।
- शीर्षक पर्कित के रूप में विज्ञापन की वस्तु का नाम अवश्य लिखा जाए।
- हो सके तो वस्तु की गुणवत्ता और कीमत को भी शामिल किया जाए, जिससे उपभोक्ता बजट के अनुसार खरीददारी कर सके।
- उपभोक्ता का ध्यान आकर्षित करने के लिए घोष वाक्य तुकबंदीवाले हों।
- विषयवस्तु भाग में विज्ञापन से जुड़ी मुख्य बातें, जैसे— उत्पाद वस्तु की विशेषताएँ (विशेष गुण, सस्ती, टिकाऊ, बेहतर आदि) उससे जुड़ी छूट आदि के बारे में अवश्य लिखना चाहिए।
- विज्ञापन की वस्तु का सुंदर और आकर्षक चित्र दिया या बनाया जाए।

विज्ञापन के कुछ उदाहरण देखिए—

मोती टूथपेस्ट का विज्ञापन



आपके दाँतों को रखे चमकदार
और ताजगी रहे बरकरार।

मोती टूथपेस्ट

- दाँतों को मजबूत बनाए।
- मोती जैसा चमकाए।
- मसूड़ों को सड़न से बचाए।
- साँसों की दुर्गंध दूर भगाए।

आज से और अभी से यह आपके शहर की हर दुकान पर उपलब्ध है।

विशेष छूट संबंधी विज्ञापन

सेन्ट्रा गिफ्ट गैलरी

नए साल की खरीददारी पर विशेष छूट!!!




बिलकुल मुफ्त! मुफ्त! मुफ्त!

जल्दी कीजिए!
यह योजना २० से ३१ दिसंबर तक ही है।

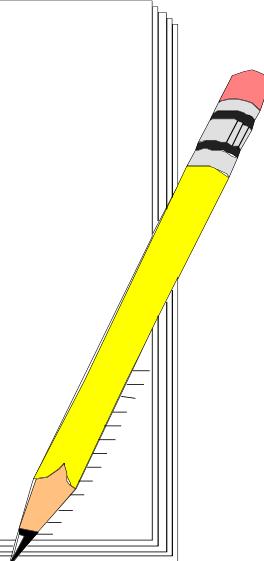
O १००० रु की खरीददारी पर २०० रु का गिफ्ट कूपन
O ५०० रु की खरीददारी पर १०० रु गिफ्ट

शादी—व्याह, जन्मदिन, नए साल जैसी खुशी के मौके पर दिए जाने वाले आपके मन—पसंद उपहार यहाँ उपलब्ध हैं।

दुकान का पता : सेन्ट्रा गिफ्ट गैलरी, न्यू शिवाजी पार्क, गोरेगाँव ईस्ट, मुंबई। दूरभाष :

हमने सीखा :—

- किसी उत्पाद या सेवा के बारे में विशेष सूचना अथवा संदेश देते हुए लिखना विज्ञापन लेखन कहलाता है।
- विज्ञापन के मुख्यतः दो रूप हैं— कॉमर्शियल विज्ञापन तथा क्लासीफाइड विज्ञापन
- विज्ञापन लेखन के समय कुछ विशेष बातों पर ध्यान देना आवश्यक है



* * * * *